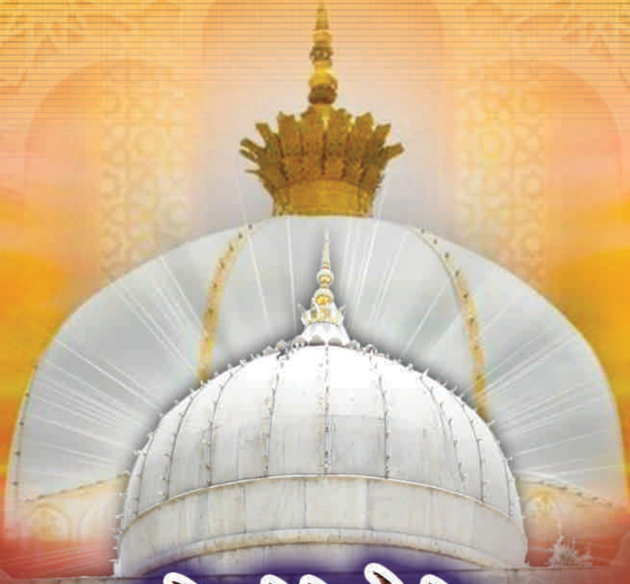


ख़ास तालीमात

हुज़ूर सरकार मोईनुददीन हसन संजरी कु0सि0अ0 ग़रीब नवाज़

मरकज़ो तसव्वुफ

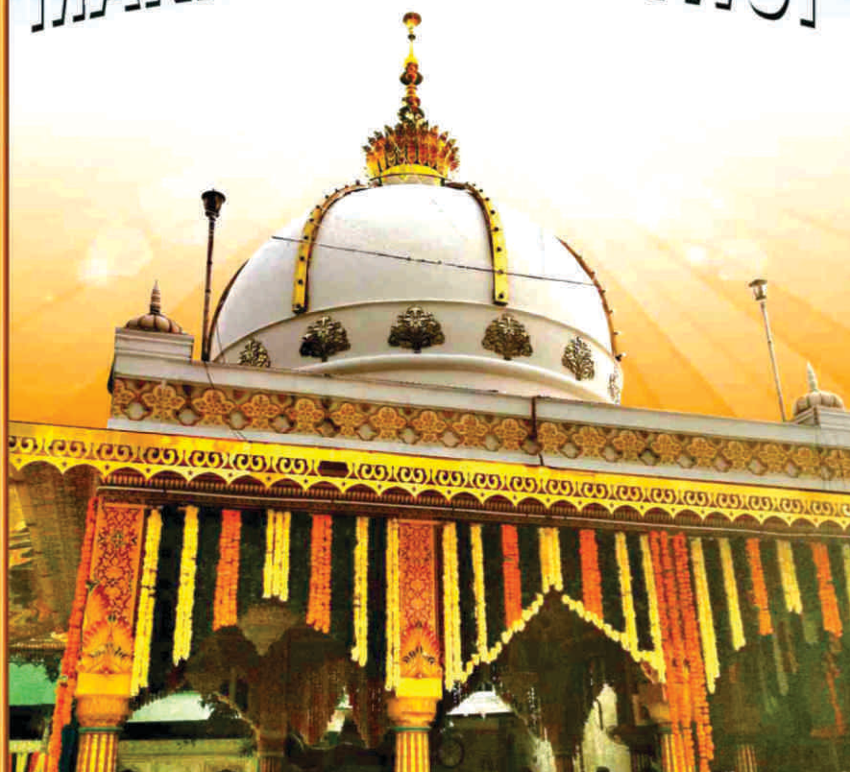
दरगाह हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख़्तयार काकी (कु.सि.अ.)

1011-E-First, दरगाह शरीफ, महरौली, नई दिल्ली-110030 फोन : 07838116286, 011-26646216

درگاہ سرکار خواجہ قطب الدین با اختیار کاکی

قدس سرّہٗ العزیز

MARKAZE TASAWWUF



दरगाह सरकार ख़्वाजा

कुतबुद्दीन बा-इख़्तियार काकी

(कु.सि.अ.)

DARGAH SARKAR

KHWAJA QUTBUDDIN BA-IKHTIYAAR KAKI(Q.S.A.)

MEHRAULI SHARIF, NEW DELHI-110030

ख़ास तालीमात

हुज़ूर सरकार मौईनुददीन हसन संजरी कु0सि0अ0 ग़रीब नवाज़

मरकज़े तसव्वुफ

दरगाह हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख़्तयार काकी (कु.सि.अ.)

1011-E-First, दरगाह शरीफ, महरौली, नई दिल्ली-110030 फोन : 07838116286, 011-26646216

सरकार सूफी गयासुद्दीन शाह



سرکار صوفی غیاث الدین شاہ

MARKAZE TASAWWUF ★ MARKAZE TASAWWUF ★ MARKAZE TASAWWUF



SUFI SYED AMEERUDDIN
9899943607



SUFI KHURSHEED
8527260537



SUFI ASHRAF
9711116516



SUFI SHABBIR
08080436438



SUFI TOWHEED
8745976052



SUFI AKASH
9910567808



SUFI MEHTAB
9012386988



SUFI ARSHAD
8960494802



SUFI KASHAN
9911590331



SUFI GHOUS MOHAMMAD
8005977496



SUFI SHAMIM
9716084184



SUFI RUSTY
9716016611



SUFI SAMEER HUSAIN
9711060125



SUFI MUSTAQEEM
09811454523

مرکز تصوف ★ مرکز تصوف ★ مرکز تصوف



सूफ़ी समीर हुसैन गयासी

सूफ़िया जी० सी० कौर

ये किताब सूफ़ी समीर हुसैन और सूफ़िया जी० सी० कौर के तआवुन से मख़लूक़ की ख़िदमत और बेहोशी व लापरवाही दूर करने के मक़सद से छपवाई गई। इस किताब को मुफ़्त में हासिल करने के लिये नीचे दिये गये राब्ते पर ताल्लुक़ क़ायम किया जा सकता हैः

मरकज़े तसव्वुफ

दरगाह हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख़्त्यार काकी (कु.सि.अ.)

1011-E-First, दरगाह शरीफ, महरौली, नई दिल्ली-110030

फोन : 07838116286, 011-26646216

सूफ़ी शमीम गयासी

Mob.: 9716084184

सूफ़ी समीर हुसैन गयासी

Mob.: 9711060125

पेशे-ख़िदमत

प्रोफ़ेसर सय्यद मोहम्मद अमीन मियाँ क़ादरी बरकाती सज्जादा नशीन मारहेरा शरीफ़ (ऐटा)

जिनकी हिकमत, सादगी, दूरअन्देशी का ये तसव्वुफ़ का ख़ादिम एहसानमन्द और शुक्रगुज़ार है

सूफ़ी ग़यासुद्दीन

मरकज़े-तसव्वुफ़

चाहे आधी रोटी खाईये
बच्चों को ज़रूर पढ़ाईये।

बरकाती पैग़ाम

शुरू अल्लाह के नाम के साथ-साथ जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

दिल से...............रे ....दिल से रे

नामुम्किन ही होता सरकार .ग़रीब नवाज़ की तालीमात का कम क़ीमत में हिन्दी ही पढ़ सकने वालों की ख़िदमत में पहुँचना अगर दीवान सौलत हुसैन साहब ने अपनी हयात मुबारक में इतनी मेहनत करके ये सब जमा ना किया होता! ये तसव्वुफ़ का .ख़ादिम अब्दुल क़ादिर फ़िदाई और जनाब .ग़यासुद्दीन अजमेर शरीफ़ का भी शुक्रगुज़ार है कि उन्होने तसव्वुफ़ के कामों को जारी रखा हुआ है।

मरकज़े-तसव्वुफ़ किसी किस्म की कमाई करने के लिये किताबें नहीं छापता, मरकजे तसव्वुफ़ सिर्फ़ और सिर्फ़ तसव्वुफ़ की तबलीग़ के लिये किताबें छापता और बांटता और लागत क़ीमत पर बेचता भी है। बेचता भी सिर्फ़ इस लिये है के तसव्वुफ़ की नयी किताब छापने में आसानी हो सके, तसव्वुफ़ की तबलीग़ इस .ख़ादिम की ज़िन्दगी का मक़सद है। दवाओं और बाक़ी .ख़र्चों का इन्तिज़ाम पेन्शन से हो जाता है। मुझे मेरा अल्लाह काफ़ी है।

आज के दौर में ना तो तसव्वुफ़ की किताबें छापी जाती हैं ना हो .ख़रीदने के लिये लोगों में शौक़ और जोश है। ऐसे दौर में मरकज़े-तसव्वुफ़ की, तसव्वुफ़ की किताबें

छापना ऐसा ही है जैसे अन्धों के शहर में आईना बेचने की कोशिश करना।

कामिल, अकमल और मुकम्मल सूफी हज़रात की किताब, हिन्दी में तर्जुमा करके लोगों तक पहुचाने की कोशिश, क्या गुनाह और क़ानून तोड़ना है, अगर ऐसा है तो ये ग़ुलाम बिना शर्त माफ़ी का तलबगार है। मुझे तो माफ़ कर दीजिये और सभी किताबें मरकज़े-तसव्वुफ़ में ले जाकर तक़सीम कर दीजिये।

कहीं तो किसी की ज़िन्दगी बदलने की ये किताब कोशिश बनेगी बस इस ख़ादिमे तसव्वुफ़ का मक़सद पूरा हुआ!

कर्मन नेवा धिकारस्य.................

शुक्रिया

सय्यद अमीरुद्दीन
सज्जादा नशीन
मरकज़े तसव्वुफ़

सूफ़ी ग़यासुद्दीन
मरकज़े-तसव्वुफ़
1011/E, दरगाह शरीफ़ महरौली
नई दिल्ली 110030

तालीम 1

1. मेरे दिल को .खुदा के नाम ने लुभा लिया है अपने नाम में छुपी .खूबसूरती की वजह से, सूखे और प्यासे होंठ भी उसके ज़िक्र से तर हो जाते हैं।
2. अगर तू हक़ से मिलना चाहता है तो उसका ज़िक्र करे क्योंकि नामे .खुदा से मिल जाना, .खुदा से मिल जाने से अलग नहीं है।
3. अगर तेरे .ख्यालों में हर व.क्त .खुदा मौजूद है तो यक़ीन जान के तू .खुदा के साथ है।
4. ऐ इन्सान ये तेरे ही लिये है के तू पाक आलम के लिये उड़ान भरे और उसका तरीक़ा ये है के नामे .खुदा का सहारा ले ले।

5 नामे .खुदा की जो अहमियत है उसके लिये अगर मुझे सौ बार जान मिले तो उस पर क़ुर्बान कर दूँ।

6 ऐ मोईनुद्दीन! .खुदा की याद से क्यों मलाल में है .खुदा का ग़म भी नामे .खुदा का मलाल ही तो है।

तालीम 2

ये तालीम बेशक सरकार ग़रीब नवाज़ के लबों से निकली है लेकिन हक़ीक़त में इन्सान के अन्दर बैठे ख़ुदा के इन्सानो के लिये है।

1 ऐ इन्सान! मैं तुझे तलाश करता हूँ तेरी बेहतरी के लिये और तू बहाने बनाकर मुझसे बचता है और जब मैं तुझे देखता हूँ तो तू चेहरे को छुपा लेता है।

2 चाहे छः दिशा हो या अन्दर और बाहर हो सब तरफ़ मैं ही तो हूँ तू मुझे ये बता दे के मुझसे अलग तू भला कब तक रह सकता है।

3 ऐ बेख़बर तू चाहे जहाँ भी हो मैं तेरे साथ हूँ मेरा दिल तुझ से ना उकतायेगा चाहे तू घबरा जाये।

4 ग़म से ग़म ना कर क्योंकि बादल तू है, लहर मैं हूँ इश्क़ कर के तेरी ज़िन्दगी का बाग हरा-भरा हो जाये!

5 मैंने पूछा तू परदे में कब तक छुपा रहेगा अब वो वक़्त आ गया है के तेरा चेहरा नहीं छुप सकता।

6 मैं तो बेपरदा हूँ अगर कोई परदा है तो वो तू ही है तेरे होने की वजह से सारे परदे है!

7 ये और वो बस कुछ नाम हो तो है ये सारा आलम जो के बस कुछ वक़्त का है बेहतर तो ये है के इन

सबको अपने में मिलाले।

8 कहते हैं के चिश्ती आईने में, मैं ज़ाहिर हूँ मोईन ए .ख़ुदा बस तू ही बेहतर जानते वाला है।

तालीम 3

1 ऐ दिल कभी पाक शराब पीने वालो के दायरे में आ फिर तुझे कैफ़ियत में हमेशा .ख़ुदा से मिल जाने की शराब पिलाई जायेगी।

2 अगर तुझे .ख़ुदा से हमेशा के लिये मिल जाने की तड़प है तो .ख़ुद को मिटा दे क्योंकि .ख़ुद को मिटाने से पहले .ख़ुदा से मिलने की राह नहीं खुलती!

3 इश्क़ का बुर्राक़ तेरी वजह से सौ क़दम चला तो फिर एक क़दम तू भी .ख़ुदा के लिये, .ख़ुदा की तरफ़ बढ़ा दे, इसमें तकलीफ़ क्या है।

4 .ख़ुदा की तलाश में तू क्यों इधर-उधर फिर रहा है तू तो .ख़ुद बारीये तआला के सब नामों को ज़ाहिर करने वाला है बस .ख़ुद को देख ले।

5 इस तरह ना देख मिट्टी से बने मिट्टी के, तू है और तेरा सबकुछ है तू जल्लाह की .ख़ूबसुरती का आईना है।

6 तेरे अपने होने का जो परदा है कि मैं ये हूँ मैं वो हूँ इसको बीच में से हटा दे फिर तेरे अन्दर ही अन्दर

.खुदा की .खूबसूरती पैदा हो जायेगी।

7 अगर तू इश्क़ की धार से दिल और तन का मैल साफ़ कर ले तो तू .खूबसुरती के आईने में मौला की .खूबसूरती देख लेगा।

8 तू ये फ़िक्र कर के तेरे दिल की आँख की सब धूल .खत्म हो जाये फिर तू .खुदा के ज़ाहिर होने के नूर को देख सकेगा।

तालीम 4

9 अगर तेरी .खुदी ''लाइलाह'' की आग से जल जाये उस व.क्त तू ''इल्लल-लाह'' का नूर देख सकता है।

10 दिल ये चाहता है के .खुदा की याद में जान दे दें जिससे आ.खिरत के रास्ते का इन्तज़ाम हो जाये।

तालीम 5

1 अगर तू अपने हक़ीक़त के दिल से अपने चेहरे का नक़ाब हटा दे तो फिर दिल के आईने में मौला का जमाल देखने लगेगा।

2 अपनी झूठी इज़्ज़त के शीशे को शर्मिन्दा होने के पत्थर से तोड़ डाल और इश्क़ की राह में परहेज़गार होने का .गुरूर बहा दे।

3 मुझे क़सम है के मैं दो आलम को एक नज़र भी ना देखूँ जो उससे पहले मौला की .खूबसूरती ना देख लूँ।

4 मैं उस पेड़ के पत्ते-पत्ते का दीवाना हूँ जिस पेड़ के ज़रिये हज़रत मूसा कलीमुल्लाह पर .खुदा का राज़ खुला।

5 अ.क्ल की नज़र से यार का जमाल नहीं दिखता मोईन, जुनून की नज़र से लैला का हुस्न नज़र आता है।

तालीम 6

1 अगर तेरे चेहरे का नूर आसमानो में चमके तो सूरज भी शर्म की वजह से नक़ाब में अपना चेहरा छुपा ले।

2 हक़ीक़त का राज़ हज़रत जिबरईल अ०स० के दिल में नहीं समोया सिर्फ़ किताब की माँ ही इस .खास राज़ को ज़ाहिर कर सकती है।

3 बेहद गुनाह करने के बावजूद या रसुल्ललाह स०अ०व० हिसाब के दिन मैं ब.ख्शा जाऊँगा ऐसी उम्मीद है।

4 मेरे दिमा.ग में जन्नत की तमन्ना नहीं उठती मुझे अज़ाब के दिन तुझसे फ़ज़ल की उम्मीद है।

तालीम 7

1 जो यार की जुदाई में एक होने की लहर में डूब जाता है उसी को आलमे ग़ैब की पहचान होती है।

2 ख़ाक के परदे से हटकर यार की .ख़ूबसूरती को देख जिस तरह आलमे ग़ैब की दुनिया के पीछे नूरे .ख़ुदा छुपा हुआ है।

3 ग़ैब की दुनिया के राहनुमा बनकर हज़रत मोहम्मद स०अ०व० तुझे .ख़ुदा की राह दिखा रहे हैं।

4 अगर तू सीधे तौर पर हक़ की आवाज़ नहीं सुन पाता तो नबी की आवाज़ को ही हक़ की आवाज़ समझ।

5 अगर अपने दिल पर जमी हुई धूल को मोहब्बत से साफ़ करके चमकाये तो अपने हक़ीक़त के दिल में ही आलमे ग़ैब का हुस्न देख सकता है।

तालीम 8

1 अल्लाह का नूर तेरे लिये ही ज़ाहिर हुआ है ''क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ।'' आयत इसी ज़माने में तुझ से कही गयी है।

2 मैं तेरा रब हूँ तू मेरा बन्दा है बस यही काफ़ी है इसलिये के बाप और बेटे में कभी ताल्लुक .ख़त्म नहीं

होता है।

3 मेरे करम पर नज़र कर ना देख अपने ग़म, क्योंकि अगर ज़रिये का मालिक ज़ाहिर हो जाये तो ज़रिया ख़त्म हो जाता है।

4 मुझे ना तलाश कर पाक बाग़ में वहाँ तू मुझे नहीं पा सकेगा जो गुनाहगार हैं और जिनके जिगर में तकलीफ़ है वहाँ तलाश कर।

5 जुदाई के वक़्त जो लुत्फ़ है उसमें मेरे करम को देख के वो लुत्फ़ ऐशो आराम के वक़्त में नहीं है।

6 राहे इश्क़ में नामो निशान से गुज़र जा ऐ मोईनुद्दीन, इस राह में यार के दर का पत्थर बना रहना अच्छा है।

तालीम 9

1 आदम जाग गये वो अब तक ख़्वाब में हैं, ख़ुबसूरत वुजूद तो उसका है जो न होने से पैदा हुआ।

2 हज़रत ईसा अ०स० आसमानों में ख़ेमा ताने हुए हैं कि उनके झण्डे का साया पड़ जाये।

3 लहर के पेट में दिल का क़ीमती मोती छुपा है वो क़ीमती मोती है जो पैदा करता है पेट की लहर से।

4 ये देखा कि गुनाह ज़्यादा है नेकियाँ कम हैं तो समझ में आया के ज़्यादा के ग़म को कम से ये ही

ताल्लुक़ है।

5 मिलन के लिये अपनी जान तड़पती रहती है लेकिन जो भी साँस लेता हूँ वो तेरे हो दम से है।

तालीम 10

1 तू ही है बस तेरे सिवा कोई परदा नहीं है नूर बस ही तेरा नका़ब है और कोई भी नक़ाब नहीं है।

2 बस तू ही अपने आपको जानता है तेरे ख्याल में ग़ैरों का कोई हिसाब नहीं हैं

3 इश्क़ कि राज़ और तरीक़े को अपने दिल की तख़्ती पर ही पढ़ के इसके अलावा इस नुक्ते के हल की कोई किताब नहीं है।

4 अगर ख़ुदा को पाना चाहता है तो अपने जिस्म से गुज़र जा, जिस्म और ख़्यालों के अलावा तेरे और ख़ुदा के बीच कोई परदा नहीं है।

5 तू अपनी जान की हक़ीक़त को देख और बदन के बाहरी हुस्न को ना देख, के जान की हक़ीक़त की तख़्ती के अलावा कोई किताब ही नहीं है।

6 जन्नत की शराब के नशे में ही कोशिश करने वाला मर गया उसे ये वहम था के उसके अलावा कोई शराब नहीं है।

7 जब उस में डूबा हुआ है तो ए मोईन नाम ना पूछ,

चुप रहने के अलावा इस वक़्त कोई जवाब नहीं है।

तालीम 11

1 तू है दिल में तेरी ख़ुश्बू से भरा हुआ हुँ मैं, तेरे इत्र की ख़ुश्बू से ही तो ये जहान महका हुआ है।

2 चमगादड़ को दिन में सूरज और रोशनी नज़र नही आती लेकिन सूरज की रोशनी तो हर जगह मौजूद होती है इसी तरह तू भी हर जगह मौजूद है।

तालीम 12

1 हक़ीक़त को आखों को खोल हर जगह ख़ुदा का नूर मौजूद है इस नूर से कोई भी जगह ख़ाली नहीं है।

2 जो हक़ीक़त इन्सानों को नज़र नहीं आती वो मेरी सुरत से जुड़कर रोशनी बनकर ज़ाहिर हो रही है।

3 ऐसा हुस्न कि जिसे मेरी आँख भी ना संभाल सके सूरज की तरह मेरे दिल के आईने पर चमका है।

4 मैंने पूछा कि ये तेरा हुस्न कब तक छुपा रहेगा तो बताया गया के हुस्न छुपा हुआ नहीं है बल्कि तेरी आँख देखने वाली नहीं है

5 इश्क़ का तबला (अनहद नाद) जो दोनों आलम में बजता है तेरी दुनिया में गुम रहने की जो रूई तूने कान में लगा रखी है उसे निकाल फिर तुझे मेरी

आवाज़ सुनाई देगी।

6 एक क़िस्म की ख़ास तन्हाई को जब से मोईन ने जान लिया है अपने होने और ना होने को ख़ुद ही खो दिया है।

तालीम 13

1 जिस्म को पूजना दोनों जहान की ख़्वाहिश का नाम है। ऐ दिल, ख़ालिस ख़ुदा का दीदार पैग़ाम के वादे में होता है।

2 हक़ीक़त के दिल को जन्नत में भी आराम नहीं मिलेगा इस दिल को तो बस आराम तेरे दीदार के इनाम में मिलेगा।

3 जब से दिल पाक आलम से ज़मीन पर आया है बस वहीं अटका हुआ है इसे तो बस वहीं जाकर आराम मिलेगा।

4 ख़ुदा को पाने के लिये उसे ज़ाहिरी आसमान के अर्श पर ना समझ बस मेरे दिल के एक क़दम का फ़ासला है।

5 जब तेरा जिस्म हदों को तोड़ने लगे तो दिल पर सवार हो जा, तेरा नफ़्स तो तेरा हुक्म मानता है बस तू अपने नफ़्स को देखने लग जा।

6 तेरे बदन की मिट्टी ही ज़ुल्म की दीवार बनी हुई है

परदा है वरना ख़ुदा के नूर की गर्मी तो दिल के दरवाज़े और दीवार में है।

7 पैसा, ताकत और माल तुझे बहकाता है वरना हक़ीक़त की बादशाही तो हक़ीक़त के दिल में है।

8 इश्क़ का नुक्ता बयान हो सकने की तख़्ती पर नहीं लिखा हुआ। ऐ मोईन ये सब तेरे हक़ीक़त के दिल में है।

तालीम 14

1 इश्क़ की आग से जिस्म और जान सब जल गये, जब आह भरी तो तालू और ज़बान सब जल गये।

2 दोज़ख़ की आग को भी जुदाई बर्दाश्त करने की ताक़त नहीं है लेकिन जुदाई की आग से सब ज़ाहिर और छुपा हुआ जल गया।

3 दोज़ख़ की आग गुनाहगारों की हड्डियाँ जलाती है लेकिन जुदाई की आग से सब ज़ाहिर और बाक़ी सब जल गया।

4 दीन और दुनिया चली गई बस मौला का इश्क़ रह गया ख़ुदा की ताब से सब ये और वो जल गये।

5 जब से जान के आईने में दीदारे-यार हुआ तो उसके नूर से जिस्म के सब हिस्से जल गये।

6 मेरे और उसके बीच सैकड़ों परदे थे लेकिन मेरे एक

शोले से आह, धुआँ और सब परदे जल गये।

तालीम 15

1 मस्जिद के मेम्बर पर खड़ा होकर इस राज़ को बयान नहीं किया जा सकता है। ऐ मोईन, इस आग में सैकड़ों मेम्बर पर खड़े होने वाले जल गये लेकिन उन्हें इस राज़ का पता नहीं चल सका।

2 अगर तू हक़ीक़त की आँख से देखे तब तू जान जायेगा के तन्हाई का साथी, पाक शराब पिलाने वाला और महफ़िल सब वो ही है और हक़ीकत के दिल पर जो ज़ाहिर हुआ जान और तब सब वो ही है।

3 अपने आप के होने को अगर इन्सान ख़त्म कर दे तो उसे साफ़ नज़र आ जायेगा के जिस्म के अन्दर ख़ुदा ही तो है।

4 पक्के हक़ीक़ी इश्क़ से सिर्फ़ मन्सूर अल हल्लाज ही बेख़ूद नहीं है सूली से भी ये ही आवाज़ आ रही है के बस वो ही तो है

5 इश्क़ के मिजाज को ज़ाहिर कर दिया कुछ भी नहीं सोचा अगर हक़ीक़त के दिल की आँख की नज़र से देखा जाये तो अन्दर वो ही तो है।

तालीम 16

1 या रब हक़ीकत के दिल के आईने में ये किसका नूर ज़ाहिर है और .ख़ूबसूरती के परदे में छुपा हुआ जो ज़ाहिर है तो फिर छुपा हुआ कौन है वो तू ही तो है।

2 जब तुझ से दोनो आलम ख़ाली नहीं है हर ज़र्रे में तू मौजूद है तो फिर हर जगह तू ही तू है।

3 सूरज एक ही है लेकिन अलग-अलग ज़र्रों में फैला हुआ है फिर ये अलग-अलग सूरतों में कौन है तू ही तो है।

4 ज़ाहिरी लिबास, जिस्म की सूरत में तू ज़ाहिर हुआ लेकिन मेरी जान की असल बनकर भी तो तू ही छुपा है।

5 अपने ऊपर आप.ख़ुद अपनी तजल्ली बन गया आशिक़ जिस पर नाज़ करते हैं उनके नाज़ करने की वजह तू ही तो है।

6 अब जब मैं और तू को बीच में लाओगे मोईन तब मैं और तू मिटाने के बाद पता चलेगा के मैं और तू में, वो ही तो छुपा हुआ है।

तालीम 17

1 दुनिया जिसे जुनून कहती है वो बोल सकते तक

बाकी रहेगा मुझको इस बात का यक़ीन नहीं था लेकिन आख़िर ये हुआ!

2 वो जो इज़्ज़त के परदे में छुपा रहता था उसने .ख़ुद अपने रुख़ से परदा हटा दिया और जहान भर में बदनाम हो गया।

3 जब लोग अपनी पहचान खो देते है तो हक़ीक़त में अपनी पहचान पा लेते है जैसे मोईन ने उस बिना पहचान वाले में खोकर अपनी पहचान, बिना पहचान का हो गया।

तालीम 18

1 इश्क़ की राह में हूँ जिगर का दर्द काफ़ी है दिल को तन्हाई, आह और शाम काफ़ी है।

2 राह पर हूँ ख़ौफ है अंधेरा है और दुश्मन भी छुपा हुआ है। नूर राह दिखाने वाला है भरोसा भी है ये नज़र काफ़ी है।

3 सूरज की तरह हर ज़र्रे की तरफ़ तू ना देख टूटे हुए दिल को तो बस उसको नज़र काफ़ी है।

4 तू ख़्वाहिशमन्द है कि जन्नत तुझे मिले जबकि जुदाई की आग जो दिल में है जन्नत से बेहतर है और काफ़ी है।

5 जितने भी नेक लोग हैं वो मानने को अपने साथ ले

जाते हैं। ऐ मोईन उस दरवाज़े पर जुदाई की एक गहरी आह काफ़ी है।

तालीम 19

1 पहले ही दिन पाक शराब पिलाने वाले साक़ी ने क्या कहा था के पाक और साफ़ शराब की तलघर में सुबह की किरन छुपी है।

2 वो पीना क्या है, बेकार है कि जो मिट्टी के तन पर चमक ना सके उस पाक शराब की तरफ़ चल जो खेंच लेती है दिल की लगन!

3 असली सवार तो आसमानों का सफ़र तय करते है अपने दिल की रस्सी को खींचकर रख अगर तुझे उस तरफ़ की चाहत हो तो!

4 मेरे हबीब के चेहरे से रोशनी ज़ाहिर है बिना ज़ाहिर किये उसके चेहरे से चमक ज़ाहिर है।

5 मोईन अगर तुझे हक़ीक़त के इश्क़ में भरता है तो मोर परिन्दे में नुक्श तलाश ना कर के यमन का शाह भी हज़रत सुलेमान का रिज़्क खाता है!

तालीम 20

1 सब तारीफ़ उसकी है जिसने बुर्राक़ पर अपने महबूब को बुलाया फिर फ़रिश्तों के कांधे जो रफ़-रफ़ था

उस पर बैठाया।

2 तारीफ़ उसकी जो मरहबा कहते हुए चले एहतराम और चमकते हुए अर्श पर फ़रिश्ते पहुंचे।

3 वो तारीफ़ जिसके साया-ए-रहमत के तुफ़ैल में, अपने मक़सद को वो कामयाब, मर्द पा गया।

4 ये उसकी सिफ़त है जिसको मर्ज़ी दे बयान करने का ज़ेवर, जिसको बयान करने का ज़ेवर मिल जाये वो पाक फ़रिश्तों से भी बेहतर बयान करता है।

5 उसकी पूरी सिफ़ात का बयान ना फ़रिश्तो से, ना इन्सानों से और ना ही जिन्नों से बयान हो सकता है बल्कि वो .ख़ुद ही अपनी सिफ़ातों का बयान करता है।

6 ये जो कम समझदार बन्दे बेकार तरीक़े से उसकी तारीफ़ करते है .ख़ुदा के लिये तारीफ़ करने का कब तरीक़ा है।

7 उसका निशान ना ढूंढ़ो के वो बे-निशान है हर ज़र्रे में .ख़ुदाई के हज़ारों निशान हैं।

8 जब तेरी हक़ीक़त की आखें ही नहीं है तो वो अपने रुख़ से परदा क्यों हटाये, हक़ीक़त में देखने वाले ही नहीं है के वो .ख़ुद को ज़ाहिर करे!

9 जिसकी नज़र पर परदों ने डेरा जमाया है उसकी नज़र पर तो इसके अलावा भी हज़ारों परदे ज़ाहिर हैं।

10 ख़ुदा गवाह है के अगर हर ज़माने में उसकी तरफ़ से कोशिश ना हो तो तेरी कोई कोशिश कामयाब नहीं हो सकती।

11 अगर मर्दे-हक़ है तो जिस्म की दीवार को हरा दे वरना हज़ारों साल रास्ते में रहेगा।

12 पहले दिन वजूद में वो ख़ुद ही बेगाना था उसके सिवा कोई ना था जिसे गुमान ना हो।

13 जिस दिन हस्ती ने हुस्न के ज़रिये झाँका था बस उसी दिन छुपा राज़ ज़ाहिर हो गया!

14 अगर तू यक़ीन करे और शक ना करे इस ख़ाक के नुक्ते पर तो सातों आसमानो पर तू ही मौजूद है।

15 इन्सान के जिस्म को नफ़्स समझ और है भी वही, ये इसलिये है के हक़ की बात का तर्जुमा बयान कर सके।

16 दिल में उस हक़ीक़त के शाह ने ख़ज़ाना रखा है वो ख़ज़ाना जिसके आगे सब ख़ज़ाने बेकार है।

17 हिकमत से जान को फ़ायदा है और शहवत से जिस्म को, अगर ज़्यादा हो तो रूह और जान का नुक़सान है।

18 जब जान हज़रत ईसा की तरह मरियम की गोद में हो फिर तो हज़रत जिबरईल के साथ आसमान पर पहुंचा जा सकता है।

19 जो उसके लिये तख़्त और ताज छोड़ देता है उसको आसमानों की बादशाही मिल जाती है।

20 ख़ुदा की रहमतें अपने दिल में बहुत ज़्यादा रखता है, मोईन, उम्मीद है कि इससे भी ज़्यादा हों।

तालीम 21

1 तेरे नूर से ही ज़मीन और आसमान ज़ाहिर हुए फ़र्श और अर्श इसी नूर से चमक रहे है।

2 ये ना कह के चाँद और सूरज में और नबियों का नूर है सुबह और शाम तो तेरे नूर से फ़ायदा पाते हैं।

3 जिसने भी तेरे हुक्म को नज़र-अन्दाज़ किया वो हमेशा के लिये शैतान की क़ैद में पालतू बन गया।

4 आप रहमत के बादल हैं और मैं गन्दगी में लिपटा हुआ हुँ मुझको धोकर पाक कर दीजिये ग़रीबो को राह दिखाने वाले।

5 ये मोईन तेरे हुस्न को आखों से देखना चाहता है जिससे जब तक बात करे ये फ़क़ीर बस तेरी ही बात करे।

तालीम 22

1 हर एक तन में अव्वल व आख़िर तू ही तो है ज़ाहिर हो या छुपा हुआ तेरा ही तो दबदबा ज़ाहिर है।

2 शुरुआत कहाँ है ये मत पूछ बस लौट के वहीं जाना है जो शुरुआत भी है और आख़िर भी।

3 अव्वल लिखा है नामे मोहम्मद का अर्श पर जिनकी उम्मत का अन्जाम नेक और बेहतर है।

4 अगर फ़रिश्ते भी तेरे हुक्म से बाहर निकलें तो वो भी शर्मिन्दा हों और कभी भी सही राह ना पायें।

5 तेरी ही हस्ती से सब कुछ ज़ाहिर हुआ है जो था, जो होगा कि ज़ाहिर हो या छुपा हुआ।

6 तुझ पर मोईन हर साँस के साथ एलाम भेजता है हक़ तआला मुझ पर हमेशा मेहरबान रहे।

तालीम 23

1 मेरा मोहम्मद स०अ०व० दिल के घर में आया उस के लिये मेरे दिल के सौ दरवाज़े खुल गये।

2 रंज, ग़म और ग़रीबी क्या है जब वो मेरी हिमायत करने वाला है, मेरा मोहम्मद स०अ०व० शफ़ाअत का मरहम है।

3 अगर कोई आज आशिक़ का ख़ून बरबाद कर दे तो कल .ख़ुदा से मेरा मोहम्मद बदला माँगेगा।

4 मोइन जब गुलशन में मौजूद है तो चमन को क्यों ढूँढता है। मेरा चमन क़ुरआन है और मेरा बाग़ मोहम्मद स०अ०व है।

तालीम 24

1 फ़ना होने वाला अगर अपना लिबास अलग करे तो क्या हो अगर वो अपने राज़ की ख़बर करे तो क्या हो।

2 तू अपने सर की आँखों से हक़ की ख़ूबसूरती को ना देख उसे तू दिल की आँखों से देख फिर क्या होता है ये देख।

3 अगर उसकी मोहब्बत को बराबरी के साथ देखना चाहता है तो फिर अपने सूर से हर तरह की हवस को दूर कर दे फिर देख।

4 कहा मोईन ने के तुझे बहुत तलाश किया तो फ़रमाया, ख़ुद से दूर एक क़दम भी चल कर देख, फिर देख क्या होता है।

5 रूह और जान जिसके इन्तज़ार में थी वो नूर दिल में चमका पहचान हो गयी उसकी जो हर दम हक़ीक़त के दिल में है।

6 जैसे सीप एक क़तरे के लिये प्यासी होती है वैसे ही फ़रिश्ते प्यासे हैं आदम की ख़ाक के लिये हज़ारों प्यासे है।

7 अपने बे-ग़म दिल को अगर तू ग़म के हाथों में दे दे तो जब इश्क़ का ग़म आयेगा तो सारे ग़मों से बे-ग़म हो जायेगा।

1 अगर महबूब साथ हो तो दोज़ख़ भी जन्नत है अगर यार साथ नहीं तो जन्नत भी जहन्नुम है।

2 ऐ नसीहत देने वाले! इस बात को समझ के मुझे सलाह ना दे तू आलिय है, और में पूरा-पूरा पाक शराब पीने वाला हूँ।

3 आवाज़ आई के ऐ आशिक़ अब तू मेरा माशूक़ हो गया है सब तारीफ़े अल्लाह को हैं के वो मेरे दम के साथ हो गया है।

4 ख़ुदा जब अपने से गुज़र कर ख़ास घर में पहुंचा तो फ़ना होकर ये कहता हूँ के ये तो होना ही था।

5 सफ़र के महीने में एक शख़्स ने मेम्बर पर चढ़कर कहा के मोईन तो बचपने ही से इब्ने मरयम यानी हज़रत ईसा अ०स० की तरह है।

तालीम 25

1 इश्क़ पिलाने वाले ने पहले ही दिन से मुझे वो पाक शराब पिलाई है बदले के दिन तक हर साँस के साथ मस्ती बढ़ती जा रही है।

2 मुझको जो पहले दिन से मस्ती मिली वो मस्ती बढ़ती ही जा रही है।

3 दिल का आईना अगर इश्क़ के ग़म से और चमकदार हो जाये क्या बेहतरीन है वो दिल जो इश्क़ की पाक

शराब से साफ़ हो जाये।

4 जब दिल ने बशर होने के ज़ुल्म से आज़ादी पाई हर तरफ़ .खुदा का नूर नज़र आने लगा।

5 वो हक़ का ही साया है जो तेरे दिल में है तू इस बात का यक़ीन कर के साया वो ही है जो हक़ीक़त में तू था।

6 परदे के पीछे वो मैं और तू का ख़्याल देता है लेकिन परदा उठते ही मैं और तू का राज़ खुल जाता है।

7 वो ही अव्वल है वो ही आखिर है वो ही छुपा हुआ है और वो ही ज़ाहिर है था भी वो ही, है भी वो ही और वो ही हमेशा रहेगा!

8 दोस्त का चेहरा बे-परदा होकर इश्क़ में चमका है मोइन, पहले तो मैं और तू का नामो-निशान भी ना था।

तालीम 26

1 मेरे सर में ये जो जुनूँ हिलता है आवाज़ आती है ना जाने ये कहाँ जाकर मिलता है।

2 पहले ही दिन से इश्क़ का डोरा उसी ने डाला है इसी लिये आशिक़ दिल तिलमिलाता है।

3 ये जो साया इन्सान के हिलने से हिलता है इसे ये ना समझ के ये .खुदा से हिलता है।

4 इश्क़ का दरख़्त दिल के चमन में बो, ऐ मोईन! फिर देख ग़म की सरसराहट से ये कैसे हिलता है।

तालीम 27

1 ऐ दिल हदीसे-मुस्तफा क़ुरआन की आयत की तस्वीर है उस हक़ ज़ात के सामने दम मारने की जान कहाँ है।

2 अगर वो हंसें या झिड़के ज़ख़्म पर नमक एक छिड़क कर मेरे अदा का ख़ंजर चले और मेरे दिल पर लगे।

3 वल्लाह वो मेरी नस-नस को शहद और मिठास से भर दे जब तीर लैला का चले मजनू के सीने पर पड़े।

4 अगर ग़रीब को मोती मिल जाये तो वो उसको छुपाता है लेकिन अगर मोईन को लालो-गोहर मिले तो वो ग़रीब को दे दे।

तालीम 28

1 हमारे दिल में हक़ के सिवा कोई दूसरा तसव्वुर नहीं समाता के जैसे तन्हाई में हक़ीक़ी बादशाह के अलावा कोई नहीं समाता।

2 अगर तू मौला के इश्क़ का राज़ जानना चाहता है तो हक़ीक़त के दिल को समझकर पढ़ के राज़े इश्क़

तो ऐसा है के हज़ारों किताबों में भी नहीं समाता।

3 ये जो मन्सूर अल हल्लाज का राज़ ज़ाहिर है ये एक क़तरा है आशिक़ की लहर का, जिस आशिक़ की जितनी हिम्मत और ज़र्फ़ होता है बस उतना ही राज़ उस पर खुलता है।

4 जो साफ़ शराब मैंने पी थी उसका राज़ छुपाकर क्यों रखूँ अगर शराबे बहिश्त जोश में हो तो सागर में नहीं समाती।

5 मोईन! अगर तू .ख़ुदा के राज़ों को ही बयान करना चाहता है तो सूली और फाँसी के लिये तैयार हो जा क्योंकि ये राज़ मस्जिद के मेम्बर से कहा ही नहीं जा सकता।

तालीम 29

1 जो यार की गली से पाँव खेंचता है उसको दोस्त के बालों का फन्दा अपनी तरफ़ खींचता है।

2 तुझे जो भी ग़ैब से आये उसमें बुरा और भला मत देख तू तो ख़ुशनसीब है के दोस्त की तरफ़ से कुछ आ रहा है।

3 दुनिया के ग़म से तू मत रो बल्कि ख़ुश हो कि ये तीर दोस्त की तरफ़ से आ रहें है।

4 मोईन के बयान से इश्क़ की हक़ीक़त को सुनो इस

की बातों से अब दोस्त की ख़ुशबु आती है।

तालीम 30

1 रोज़ी की फ़िक्र छोड़कर - रोज़ी और रिज़्क देने वाले को तू जान फिर देख के किस तरह तुझको सब कुछ मिल जाता है।

2 गुनाहों की वादी में ऐ कमज़ोर उम्मीद को ना छोड़, ना जाने कब अल्लाह की रहमत का बादल आ जाये।

3 सीने की शाह-रग में एक शोर और ग़ुल उठ रहा है इससे पता चल रहा है के हक़ीक़ी बादशाह इसी राह से आ रहा है।

4 आँसुओ की शराब और अपने जिगर के कबाब को ला, और तेरे साथ दर्द की आह भी हो।

5 इस जंगल में अपने मुर्शिद के बिना सफ़र ना कर ऐ मोईन! तन्हा ना जा, ठहर जा के वो तेरा राह दिखाने वाला आ रहा है।

तालीम 31

1 यही अब वक़्त है के दिल को तौहीद के राज़ों का पता चल जाये अब वो मौक़ा आ गया है के दिल बारीये-तआला की पहचान करने में लग जाये।

2 वो छुपा हुआ ख़ज़ाना अब खुले बाज़ार में ज़ाहिर हो

गया है जो ख़ुदा के दीदार की तलब रखते है उन्हें चाहिये के वो बाज़ार की तरफ़ रुख करें।

3 समझते हो कि रेगिस्तान में ख़ेमा तान रखा है कि इस कोशिश से उसका दीदार हो जाये।

4 अगर परदा हूँ मैं तो बीच में से हर जाता हूँ, हर कम नज़र वाले के, ताकि हुस्न का दीदार हो जाये!

5 जब वो ख़ुद अपना हुस्न मेरी जान के आईने में दिखता है क्यों ना इस वास्ते दिल यार पर फ़िदा हो जाये।

6 ख़ुदा सब जानने वाला है ख़ुद आया है मगर हम सब महरूम हैं वो छुपकर सब देखता है हक़ीक़त के दिल में दीदार हो जाता है।

7 जौहरी वो ही है जो असली मोती की पहचान जाता है जिस्म की सीप को जो तोड़ देता है वो असली मोती बन जाता है।

8 अगर तू पानी और मिट्टी के परदे को अपनी जान से हटा दे तेरी हस्ती सरापा नूर हो जायेगी।

9 कोई भी ग़ैर नहीं है सब यार के आईने है, अगर तू उसके आईने में देख सब यार हो जाये।

10 बक़ा की महफिल में जो बक़ा की पाक शराब पीता है मन्सूर अल हल्लाज की तरह वो बन्दा ''मैं हक़ हूँ'' कहकर ख़ुशी-ख़ुशी सूली चढ़ जाता है।

11 उसके उलझे हुए बालो पर जो कमन्द फेकें वो तसबीह और इबादत छोड़ देता है और जनेऊ की तरफ़ झुक जाता है।

12 ये राज़ शायद बेपरदा होकर इसलिये खुला है के जो दिल बेख़बर हो उसे भी ये राज़ ज़ाहिर हो जाये।

13 जब ख़ुदा का लुत्फ़ो करम हो तो ये क्या अजीब है के मुझ जैसा गुनाहगार बन्दा भी उसके दरबार में बड़ा मक़ाम पा जाये।

14 मोईन की जान और दिल में कुछ ऐसी रूह की पाक शराब डाली गयी है के अब सीने में दिल ही नहीं बचा कि चालाक हो जाये।

तालीम 32

1 पाक शराब पिलाने वाले ने कुछ ऐसा करिश्मा दिखाया कि आशिक़ों की महफिल से सबका होश जाता रहा।

2 ना इश्क़ की अक्ल रही और ज़ुल्म और नूर भी ना रहा ग़ैर होने की आग ने सबको जला के राख किया अब कोई ग़ैर ना रहा।

3 जब मोहब्बत के सूरज की रौशनी फैली तो हर ज़र्रा आफ़ताब जैसा हो गया।

4 ना जाने कैसी चमक उस पाक ख़ास शराब में थी कि ग़ैर होने का जो ज़ंग लगा था वो ख़त्म हो गया

और दिल चमक गया।

5 मोईन अपना काम किये जा चाहे अन्दर की हालत अच्छी हो या ख़राब, इधर अन्दर की आ कि तेरे साक़ी ने जाम पेश किया।

तालीम 33

1 मैं अगर .खुद ना गया तो मुझे खींचता है मेरे साथ उसके इश्क़ का कुछ ऐसा रिश्ता है।

2 वो कभी .खुद ही बुलाता है कभी दूर करता है इसी तरह वो अपने आशिक़ से बर्ताव करता है।

3 जब उसकी .खूबसुरती सैकड़ों परदों से भी ज़ाहिर हो रही है हाय वो वक़्त कैसा होगा जब उसके चेहरे पर परदा नहीं होगा।

4 हालांकि बा-.खुदा वो अपनी जगह से जुदा नहीं है लेकिन फिर भी रात दिन तो मेरे दिल में जलवा रखता है।

5 आख़िरत में वो उसे ही अपना हुस्न दिखायेगा जो अपने हक़ीकत के दिल को साफ़ और चमकदार रखेगा।

6 उसका हुस्न सूरज की तरह चमका है, ऐ मोईन! ये हक़ीक़त वो ही जानता है जो देख सकने वाली आँख रखता है।

तालीम 34

1. मुझे पिलाने वाला साक़ी पाक शराब में कुछ अलग ही असर रखता है दुनिया वालों को अगर उसका एक क़तरा भी मिल जाये तो तो दुनिया से बेख़बर हो जाये।
2. ऐसी मस्ती किसी भी जाम और पाक शराब के पीने के बरतन में नहीं है जो मस्ती वो चाशनी वही जान सकता है जिसकी पहुँच उसके लबों तक है।
3. ना तो अक़्ल बाक़ी रही, ना ही दीन, ना ही जान ना ही दिल जब उस दिल को पाक शराब पिलाने वाले ने अपने से परदा हटाया।
4. दिलदार के सिवा दिल में और क्या नज़र आ सकता है अगर मेरे जान के आईने में महबूब नज़र रखे।
5. बदन के टुकड़े करके भी वो करम नहीं करता सिवा उसके जो दिल से तड़पकर उसे पुकारता है।
6. मेरे दिल का तूर उसके नूर की तजल्ली से रोशन है भला सूरज को क्या ग़म हो सकता अगर ज़र्रा जिधर चाहे अपना रुख़ रखे।
7. ऐ नसीहत करने वाले! तू क्या मुझे जन्नत की तरफ़ बुलाता है के आशिक़ तो अपने यार से मिलने की तड़प रखता है।

8 मोईन वहदत के राज़ को हरदम नहीं कहना चाहिये मगर क़लम का राज़ कहता है के दुनिया का क़लम दो सर रखता है।

तालीम 35

1 सीप जो पानी में रहती है प्यासे होंठ रहकर भी बारिश के क़तरे को तलाशती है क़तरे से इसे मिलन की आरज़ू इसलिये है के बारिश का एक क़तरा इसे तस्कीन देता है।

2 सीप बारिश से अपनी प्यास बुझाता है के जब दरिया का पानी गरम होकर भाप बनकर उड़ जाता है।

3 सदफ़ से जब क़तरा मोती बनकर निकलता है और उसका ताल्लुक़ आख़िर में हो जाता है वो फिर आसमान तक सर उठाकर दरिया से दूर होता है।

4 वो दरिया से भाप बनी, जिससे बादल बना, फिर बारिश हुई अब वो क़तरा फिर लहर बनता है।

5 जो अपने आईने में यार को देखे तो बेहतर रहे। मगर शर्त ये है के दिल का आईना साफ़ रखना पड़ेगा!

6 मोईन बिना आईने के कब यार दिखता है मगर लिबास में .ख़ुद को देखना भी क्या ही बेहतर है।

तालीम 36

1 अगर ये पानी और मिट्टी का जिस्म-पिंजरा ख़त्म हो जाये तो हर ज़र्रे में यार का दीदार हो जाये।

2 हक़ की तलाश करने के लिये नेक इरादा बेहतर है ये भी ज़रूरी है के दिल में किसी और का ख़्याल ना हो।

3 आसमानों की सैर करता हुआ जो आशिक़ गुज़र जाये, दोनों आलम से गुज़रकर वो यार का दिलदार हो जाता है।

4 दुनिया में उसकी ख़ुशबू से मैं इधर-उधर घूमता हूँ जब कल महशर में उसे देखूँगा तो सब हाल खुल जायेगा।

5 पाक शराब ज़्यादा पीने वाले पर.ज्यादा राज़ खुलते हैं सीना के उन राज़ो को अन्दर रख सकता है जब वो .ख़ुद राज़ हो जाये।

6 वहदत की शराब पीकर मैं मर गया हूँ और दीवाना हो गया हूँ के अगर “लैला” भी घर आये तो मजनूँ रोने लगे।

7 माशूक़ आशिक़ बन जाये और आशिक़ यार बन जाये पूरे का पूरा नाज़ बनकर यार का दिलदार हो जाता है।

8 मोईन जब तक ग़म में हाल से मजबूर रहेगा ओह क़िस्मत का सितारा चमक जाये अगर यार का दीदार हो जाये।

तालीम 37

1 पाक शराब पिलाने वाला जाम में शराब डालता रहे और आशिक़ देखने को देखने में बस बेख़बर रहे।

2 हर चीज़ में उसके हुस्न के जलवों की चमक है मुर्दे की ख़ाक भी हो तो फिलहाल जी उठे।

3 बेखुद ख़ुदा की याद में गुम होना जायज़ है। मयखाना मस्त नहीं करता बल्कि पाक शराब मस्त करती है।

4 जब इश्क़ की राह में अक़ल अपना क़दम रखती है तो क़ज़ा का हाथ सब ताल्लुक से अलग कर देता है।

5 अगर मोईन कोशिश करके सौ या हज़ार ख़त लिखे तब भी ये मुश्किल ही है के राज़े-इश्क़ का एक हरफ़ भी तय कर पाये।

तालीम 38

1 सिर्फ़ मूसा ने ये नहीं कहा था के मुझे अपना जलवा दिखा, ग़ैब में हम सबने भी अपना सर उसके दरवाज़े पर रख दिया।

2 ऐ तक़रीर करने वाले मुझे जन्नत की दावत मत दे जन्नत से भी बड़ा एक इनाम मेरी क़िस्मत में लिख दिया गया है।

3 बारीये तआला ने जिस किसी के भी दिल की मिट्टी को पाक कर दिया उसको वो पाक शराब का जाम देता है।

4 जिस दिल और जान पर बारीये तआला को देखने का साया भी पड़ जाये तो उसके दिल का हुजरा नूर से भर जाता है।

5 जबकि ख़ूबसूरती के लिये बादशाहों के पास ताज और तख़्त है मिस्कीन मौइन पर उसने अपने जलवों का ताज और मेम्बर रख दिया।

तालीम 39

1 ऐ अक़्ल अब तू मेरी पाँचों हवास से उठ जा क्योंकि मेरा यार इसी छुपी हुई राह से आ रहा है।

2 बनाने वाले ने ग़ैब में जिसे जैसा बनाया है इस दुनिया में वो वैसा ही बन जाता है।

3 परदे के पीछे ये कैसी आवाज़ है के जो आशिक़ सुनते हैं जिसके सुनने से आशिक़ रक़्स करने लगते हैं।

4 मेरी गर्म साँसों को देख यक़ीन कर, होशियार इसी से

सर से ये धुआँ आता है।

5 इश्क़ की आग जो जलती है मौइन की जान में, उसी की बू जले हुए दिल से आती है।

तालीम 40

1 अगर यार की .ख़ूबसुरती देखना चाहता है तो दुनिया के ज़र्रों को देख क्योंकि हर ज़र्रे में मेरे यार का जलवा चमक रहा है।

2 अपने मौला का ईनाम क़ाबू में रखना चाहिये क्योंकि कभी-कभी ये इश्क़ अक़्ल के हाथों से दावेदार बन कर चमकता है।

3 ऐ सूफी! इश्क़ की आग में रेशम की पौशाक जला दे कि इसके हर-हर धागे में जनेऊ से सैंकड़ो रिश्ते चमकते है।

4 चालाक लोगों पर ये हक़ीक़त ज़ाहिर नहीं होती ये मस्ती का छुपा हुआ राज़ ख़ुमार वाले दिल पर चमकता है।

5 मोईन की बात सुन, दोज़ख़ की आग का कुछ .ग़म ना कर क्योकि मूसा को यार की .ख़ूबसूरती के अन्दर आग चमकती दिखती है।

तालीम 41

1. बाढ़ यानी सैलाब में एक शोर था जब वो दरिया से अलग था जब वो दरिया में फिर मिल गया तो ख़ामोश हो गया!
2. दिल के काँधों से दोस्त से बातचीत होती है ऐसी बातचीत जिसकी ख़बर ज़बान और कानों को नहीं होती है।
3. ग़ैब का माशूक़ अपने चेहरे से अपना नक़ाब उलटे हुए है लेकिन क्योंकि तू पहचानता नहीं इसलिये तुझे नज़र नहीं आता!
4. जब जुदाई की रात को मेरी जान जिस्म से जुदा होगी उस वक़्त दोबारा यार से मिलकर उसके आग़ोश में समा जाऊँगा।
5. जब कभी तेरे मुँह से सख़्त और कड़वी बातें निकलती हैं वो दुश्मनो के लिये तो ज़हर है लेकिन मेरे लिये पाक शराब है।
6. जिस किसी को होश है उसको ऐ पाक शराब पिलाने वाले, पाक शराब दे दे क्योकि तेरा ये मोईन तो पहले दिन से ही बे-ख़ुद और मदहोश है।

तालीम 42

1 पाक शराब पीने वालों के लिये ज़मीन पर शराबे-तहूरा झिड़क दी गयी है पाक शराब पीने वाले क्योंकि यहाँ आते हैं।

2 .ख़ूबसूरती का चाँद जो ज़मीन के सर पर चमका है उसको देखने के लिये आशिक़ यहाँ आते है।

3 वाह क्या .ख़ूब है के मिलन इस जिस्म की महफ़िल में होता है जान को दाँव पर लगाने के लिये आशिक़ यहाँ आते है।

तालीम 43

1 ''ला-मकाँ'' ''कोई मकान नहीं है जहाँ'' वहाँ से ये इश्क़ उतर आता है और आशिक़ों के परदे से होकर उनके दिलो में समा जाता है।

2 झाड़ और पोंछ के दे आज मुझे रूह की शराब क्योंकि इस ख़ाक के पुतले में मेरे जहाँ का शाह आ रहा है।

3 जान बन जाता है ये पूरे का पूरा जिस्म जब मेरी जान में ज़ाहिर होकर वो महबूब आता है।

4 दौलते दुनिया को पहले ख़त्म करना चाहिये उसके बाद ही हुस्ने माशूक़ दिल में नज़र आता है।

5 पहले ही दिन इश्क़ का दफ़ बजाया था उसने नाम

जिस-जिस का उस घर में उतर आता है।

6 हर किसी को ये मंज़िल नहीं मिलती, मिस्कीन दिल और बेकस पर ये ज़ाहिर होता है।

7 जब मोइन ख़ाक है इस बारगाह के दर का, इस वजह से ही वो इस घर में रहता है।

तालीग 44

1 मिट्टी भी जान बख़्श दे अगर पाक शराब की एक घूंट मिट्टी पर डाल दी जाये ''हा'' और ''हू'' करते हुए क़ब्र से मुरदे भी उठ जायें।

2 पहले ही दिन बिना किसी ज़रिये के रूह में चमका था तू, आख़िर के दिन भी बिना फूँक और सूर तू ही दम दे।

3 ज़ुल्म का ज़्यादा होना अब ख़त्म हुआ और वहदत का नूर रक़्स कर रहा है अब दुनिया का साया उठ गया और बस अल्लाह का नूर रह गया है।

4 जिस्म के ज़र्रों से उठती है अनल-हक़ की सदा ये पाक शराब किस तरह की है जो मुझ में ये शोर कर रही है।

5 अल्लाह के एक होने का जाम सैकड़ो रंगों को मिलाकर एक रंग कर देता है ग़ैब सामने आ जाता है और मौजूद उसके हुज़ुर मे खड़ा रहता है।

6 अगर मोईन का मिस्कीन दिल जान की मजबूरी का हामिल नहीं है के वो अभी हिम्मत नहीं रखता कोहे तूर की तजल्ली को बर्दाश्त करने की।

तालीम 45

1 पहले ही दिन के उस्ताद के सामने मैंने एक-दो लफ़्ज़ पढ़े थे अब उन अल्फ़ाज़ों के नये-नये मायने आख़िरी दिन तक खुलते रहेंगे।

2 तू मुझसे बार-बार कहता है के दुनिया और जन्नत को छोड़ दे जबाके जन्नत से भी आगे मेरी एक और ही दुनिया है।

3 काश के हज़रत जिबरईल इस दुनिया पर और करम करते, हर एक-दो दिन में एक और ईसा ज़ाहिर होते रहते।

4 पहले दिन के फैसला करने वाले ने जब मेरे हक़ में बक़ा लिख दी है फिर मोईन के सामने और कोई दावा क्यों ना आये।

तालीम 46

1 चीड़ और चिलगोज़े के पेड़ के क़दमों पर एक और पेड़ ने अपना सर रख दिया और जब मैंने यार की ज़ुल्फों को देखा तो नाशाद सर रख दिया

2 सर पर कफ़न बाँधकर तेरा ज़ुल्म सहता रहा हूँ क्या ये कफ़न पहले ही दिन बंध गया था।

3 ज़ाहिद मुझे कहता रहता था के बुत को सजदा ना कर यार को जब देखा तो शरमा कर रख दिया क़दमो पर सर।

4 जान के कांधों पर मुश्किल काम पड़ गया है के ऐ मोईन, आक़िबत पर रोता हूँ रोते हुए नाशाद सर।

तालीम 47

1 उल्फ़त का राज़ अभी ज़र्रा बराबर भी ज़ाहिर नहीं हुआ है अभी तो कुछ भी नहीं देखा अभी और इन्तज़ार कर!

2 सूरज और आसमान सब उसी का तो साया है लेकिन जिस दिल पर ज़ंग लगा हो वो चमगादड़ की तरह उसको नहीं देख सकता!

3 इस दुनिया की हैरत भरी चीजों को देखकर ही तू हैरान हो रहा है देख अभी इसे बनाने वाला ज़ाहिर होने ही वाला है।

4 सीप की तरह दरिया डूब जा और फिर भी प्यासा लौट आ, मेरी तरह प्यास में क़तरे का अभी तलबगार बन।

5 ये दिल कहता है के वो नाज़ से अलग है लेकिन

फिर भी वो छुपी निगाहों से मुझे देखता है।

6 उसकी याद में दोनो आलम को मोईन भूल गया है मेरी मिस्कीन जान बस अब उसी को चाहती है।

तालीम 48

1 देखने के लिये तलब रखने वाले के लिये यार हुस्न का दरवाज़ा खुल गया उसके लिये जो अपनी शोहरत से तौबा करने लगा।

2 रुख़ दिखाकर दिल को लेकर परदे में वो छुप गया, ज़ख़्मी जिगर पर वो एक और जख़्म लगा गया!

3 जुदाई की आग में मेरा होना सब जल गया, ज़िंदगी भर की जमा वो मेरे ग़म के हवाले भर कर गया!

4 मैंने कहा रुख़ दिखा, उसने कहा जल जायेगा, मैने कहा जल जाऊँ या रह जाऊ मुझे सब क़ुबूल है!

5 मेरे दिल का शहर जुदाई के ग़म से खराब है शायद तेरे मिलने से फिर चमकदार हो जाये।

6 मेरी जान का बाज़ पानी और मिट्टी में फंसा हुआ है अगर तू ख़ुद ही बुलाये तब ही ये आज़ाद हो सकता है।

7 ख़ुदा को पहचान लेने की चाहत में आशिक़ो के साथ बैठना पड़ता है अपने आप उस्ताद का लक़ब नहीं मिलता ऐ मोईन।

तालीम 49

1 दोनों जहाँ की दौलत से मुझे तेरा मिलन ज़्यादा प्यारा है अगर दिल में तेरी याद रहे तो बस ये ही तो मिलन है।

2 मिलन के लिये बादशाही हो ये ज़रूरी नहीं बल्कि मुश्किल है हक़ीक़ी चाहत रखने वाले को तो घोड़े का नाल काफ़ी है।

3 तुम्हारे इश्क़ में ज़ुल्म सहकर भी .खुश हूँ। मेरे लिए तेरी सज़ा भी करम।

4 मेरे दिल पर जो तेरे हुस्न का साया पड़ा मेरी निगाह और दिल तेरी .खूबसूरती का आईना बन गया!

5 तेरा कमाल तो बेकार लोगो को भी कमाल वाला कर देता है बुरे लोगों को अगर तेरा एक ख़्याल आ जाये तो तो उनके लिये काफ़ी है।

6 तेरी मेहरबानियों का शुक्र अदा करना नामुमकिन है अगर तू दुआ ही सुन ले तो ये ही मिलन है।

7 मोईन अपने .खुदा से क्या तलब करे ये तो माँगने वाला है इसे तो इसका .खुदा ही काफ़ी है।

तालीम 50

1 मुझे नेमत चाहिये या बला मुझे नहीं मालूम लेकिन

मुझे हर हाल में हमेशा के लिये हक़ तआला की रज़ा चाहिये।

2 अगर .ख़ुदा की मर्ज़ी मुझे बला में डालना है तो मैं हमेशा बला में रहना चाहता हूँ!

3 दुनिया .ख़ुदा से नेमत, फ़ज़ल और अता चाहती है मैं दिल का सबर और बला चाहता हूँ।

4 ज़ाहिदों की इबादत उक़बा और जन्नत के लिये है मैं तो इस दुनिया में .ख़ुदा को ही चाहता हूँ .ख़ुदा की कसम।

5 सब अपने-अपने दिल के मुताबिक़ मुराद माँगते है लेकिन मेरे दिल की मुराद और मक़सद तू ही है।

6 इस दुनिया में हर कोई ज़िन्दा रहना चाहता है लेकिन मोईन तेरी फ़ना में फ़ना चाहता है।

तालीम 51

1 ये दिल यार की तड़प में परवरिश पाता है जिस तरह सोना आग में जलकर पाक होता है।

2 यार के साये में रहकर में दिल फलता फूलता है जिस तरह छिलके के अन्दर मेदा पलता है।

3 पाक इश्क़ हर लम्हा दिल की हालत बदलता रहता है वो दिल ही बेहतर है जो हमेशा यार के हुस्न की कैफ़ियत में गुम रहे!

4 छुपा हुआ राज़ ऐसा कब है के वो दुनिया भर में सब पर ज़ाहिर हो जाये वो तो बस राज़ के परदो में परवरिश पाता है।

5 जिसकी हस्ती में हक़ के सिवा कुछ भी ना हो वो मंसूर अल हल्लाज की तरह गुलज़ार में भी सूली पर लटका दिया जाता है।

6 एक होने का राज़, ज़्यादा होने में इस तरह छुपा है जैसे परकार के नुक्ते से ही सारा दायरा बनता है!

7 एक होने के गुलशन में वो इस तरह है जैसे हज़ारों काँटों के बीच एक गुलाब होता है।

8 ऐ मोईन तू हसद करने वालों की साजिशों का ग़म ना कर जबकि आशिक़ों का दिल तो तकलीफ़ पाकर ख़ुश होता है!

तालीम 52

1 अगर सीधा-सीधा देखने की ताकत नहीं है तो ज़ात के अक्स में देख .ख़ुदा .ख़ूबसूरती को उसकी कायनात में देख!

2 हक़ का जमाल उसकी सिफ़ातों के आईने में ज़ाहिर है आईना भी एक सिफ़त है अपने कामों की निशानी में देख।

3 ये जिस्म जान को ज़ाहिर करने वाला है और जान

वो ही है जब वो नाम में ज़ाहिर है फिर उसको ज़ात में देख।

4 उसके जलवे से पहाड़ टुकड़े-टुकड़े हो गया हक़ का जमाल तो ज़ाहिर है बस तू कोहे तूर के टुकड़ो में देख।

5 जिसे दुआओं में बरसों से तलाश करता था वो मुझे यहीं मिल गया बस पाक इश्क़ के पाक नशे में देख।

6 मोईन को पाक इश्क़ ने अक़्ल और समझ से दूर कर दिया सब कोशिश बेकार हो गयी वक़्त में देख।

तालीम 53

1 .खुदा के हुक्मों को मान कर अमल कर और दुनिया के गमों से दूर हो जा, दिल को धो और अपने आप को मैं और तू से दूर कर ले!

2 अपनी हवस को छोड़ दे उसकी सोहबत की सोच, आसमानों का सफर तय करके उसका हो जा जिसका कोई मकान नहीं है।

3 हक़ की तरफ़ परवाज़ करने वालों को जन्नत की हूरों की तरफ़ ना बुला, जा जो ये हवस रखते हों उनको अपने जाल में फंसा।

4 उसने पाक मयख़ाने में ले जाकर कहा के ए हक़ के मस्त ले पाक जाम थाम और हमेशा मेरी याद में रह!

5 तूने मंसूर अल हल्लाज को एक पाक जाम देकर मैं और तू का शोर शराबा मचा दिया और फिर उसे मजबूर करके कह रहा है के ज़बान ना हिला।

6 तू जब आशिकों को अपना जमाल दिखाये तो उस वक़्त तू मोईन को उनकी आँखों के सुरमे की तरह बना दे!

तालीम 54

1 नफ़्से अम्मारा के अजगर से भला हज़रत मूसा क्यों डरते, क्योंकि हज़रत मूसा के पास जब उनके रब की तरफ़ से "ना डरते" की वही आ गयी थी।

2 ये इन्सान सिर्फ़ पानी और मिट्टी का ही नहीं है इस में कुछ बहुत क़ीमती भी है, वरना भला कोई रेशम के धागे में पानी और मिट्टी की बनी ठीकरी भी पिरोता है।

3 हज़ारों क़तरों में से एक क़तरा सीम के पेट में जाकर मोती बनता है!

4 ये ज़िन्दगी बहुत ही क़ीमती है इससे जो ग़ाफ़िल रहे तो अपने आपको बरबाद करता है।

5 मुझे तू याद कर मैं याद में रखूँ तुझे क्या है, करम की शुरुआत तो माशूक़ की तरफ़ से होती है।

6 मोईन के दिल से तो हरदम आहों के तीर निकलते

है अब क्या किया जाये जब कोई तीर निशाने पर ही ना लगे।

तालीम 55

1 अच्छे और बुरे सबका मामला तेरे हाथ में है अपनी तड़प तू ही किसी दिल में पैदा करता है!

2 अगर किसी को इश्क़ का गाना आसमान से सुनाई दे तो वो रक़्स करते हुए अपने कपड़े तक उतार देता है।

3 जो मुफ़्ती इश्क़ को मना करता हो उससे भला ये नुस्ख़ा तो पूछ कि नमक की खान में गिरकर सभी कुछ नमक कैसे हो जाता है?

4 इल्म को चाहने वालो से भी और ख़ानकाहों के पीरों को भी ये बात समझ में नहीं आयी और ना ही ये राज़ खुल पाया!

5 हक़ की .खबर देने वाला, हक़्क़ुल यक़ीन का नूर जब दिल में चमका, दिल के आईने से रोक की हो गयी! धूल साफ हो गई।

6 या .ख़ुदाया मोईन के तो कोई नेक अमल नहीं है उसका दिल तो बस तेरे फज़ल पर निगाह रखता है।

तालीम 56

1 ''ला'' यानी ना होने की लहर में एक मिसाल के तौर पर मोती की तरह छुपा हुआ था इश्क़ ने ग़ोता लगाकर मुझको ज़ाहिर कर दिया।

2 कब तक सीप में छुपूँ जबकि इश्क़ के दरिया का नायाब क़ीमती मोती हूँ जबकि ख़ुदा का आईना हूँ अन्दर क्यों छुपा रहुँ।

3 सीप से बाहर निकलकर ताज की ख़ूबसूरती बन गया मुझसे तो सूरज और चाँद रौशनी पाते है।

4 मेरा दिल लेकर ये कहा के इसका बदला दूँगा और वो बदला मुझसे मिलन होगा जब बदला ख़रीद लिया तो जाने जहाँ क्यों नहीं देता।

5 दिलदार हूँ मौत मुझको ख़त्म नहीं कर सकती जब मिलन का वक़्त आये तो भला दुनिया का क्या ग़म हो।

6 अपनी मरज़ी के मुताबिक सब मुराद मांगते है ज़ाहिद नेक अमल, लेकिन मैं तेरा दीदार चाहता हूँ!

7 जब अर्श और कुरसी से ये राज़े इश्क़ हल नहीं हुआ तो ऐ मोईन एक ग़ज़ल में भला ये इश्क़ का राज़ कैसे बताया जा सकता है।

तालीम 57

1 जान के आईने पर वो नूर ज़ाहिर हो गया तो हक़ीक़त में तो ही था लेकिन में मिसाल समझा!

2 होश अगर मेरे गुम हो जायें तो मुझे मजबूर समझो के मैंने अजीब आईने में जमाली .ख़ूबसूरती देख ली!

3 पहले ही दिन से मैं आशिक़ और मस्त बनकर आया हूँ होश में यहाँ रहना अच्छा है लेकिन मुश्किल है।

4 मेरी हस्ती मिट गयी हमेशा रहने वाली हस्ती ही रह गयी, जुदाई का गम, मिलन की उम्मीद में देख लिया!

5 .ख़ुदा के एक होने की महफ़िल मुझे छोटी नज़र आयी मगर जब तंग राह से गुज़रा तो मुश्किल नज़र आई

6 जब मोईन पहले ही दिन के नूर की तरफ़ चला तो वहाँ ना सुबह थी, ना शाम, ना ही दोपहर थी।

तालीम 58

1 मेरी तरफ़ को तो आ, यार वफ़ादार हूँ मैं, जो भी रखता है सब ला के खरीदार हूँ मैं!

2 अगर तेरा दिल तमाशा लगाने को करता है ए शाह, तो आ, मैं भी बाज़ार में सजने को तैयार हूँ।

4 अगर तू गुनाहों की मुसीबत से ग़म में रहता है तो मेरे पास आ मैं इसका इलाज करने वाला हूँ।

5 इबादत के क़ाबिल जो हैं उनमें क्या करता मेरी तलाश अब तो परदे से निकल, मैं तो बाज़ार में भी हूँ।

6 अगर तुझे शाही ताज की फ़िक्र हो या फ़क़ीरी पोशाक की सर पर बाँध ले के तेरी पोशाक और पगड़ी हूँ मैं।

7 बे-दिली भूल जा और अपनी ग़रीबी पर मत रो, तेरे लिये हर जगह दिलबर और दिलदार हूँ मैं!

8 अपने दिल का राज़ हरगिज़ किसी से ना कहना, जान के तन्हा होने पर में तेरे सब राज़ जानने वाला हूँ।

9 गौहर की खान की तरह ये तेरी ख़ाक की हस्ती है हक़ीक़त के मायनो की लहर में, तहों कि अन्दर बादशाह होने वाला मोती हूँ मैं।

10 इश्क, की आग ने मोईन को लकड़ी की तरह जला दिया शोला बन के अब ये कहता हूँ कि आग हूँ मैं।

तालीम 59

1 ऐ समझदार मुझे मेरे मुर्शिद के कूचे से जन्नत की तरफ़ ना बुला ये तो देख के कहाँ से कहा जा रहा हूँ मैं।

2 मैं कोई नया पाक शराब पीने वाला नहीं हूँ पहले ही

दिन से बेख़ुद और मस्त बना हूँ मैं!

3 मैंने बुत के अन्दर बुत बनाने वाले के हुस्न को देखा है हक़ीक़त में तौहीद यही तो है जिसे पूजता हूँ मै!

4 मैं ग़र्क़ हो चुका हूँ मोहब्बत की लहर में, ऐ ख़िज़्र अपनी हस्ती से तब ही जुदा हूँ में।

5 दुनिया से उम्मीद छोड़कर अब आस्तीन को झाड़ ले क्योंकि यहाँ आँसुओं के सिवा और कुछ नहीं पा रहा हूँ मैं!

6 मोईन के दिल से अब ख़ुश होने की चली आदत गयी अब तो अपने ही सीने में बैठकर ग़म खा रहा हूँ मैं।

तालीम 60

1 जब यार मेरा है तो कोई और नहीं चाहिये जो मेरा दिल ले ले एसा कोई और नहीं चाहिये।

2 मेरे दिल में उल्फ़त की चुभन जो दाख़िल है बस ये ही चुभन मुझे चाहिये मुझे कोई गुलज़ार नही चाहिये!

3 अगर तू अपना जलवा दिखा दे तो दोनो जहाँ न्यौछावर कर दूँ मुझे तेरा दीदार चाहिये दीनार नहीं चाहिये।

4 जो तेरा राज़ है किसी और पर क्यों ज़ाहिर करूँ तू जाने, मैं जानूँ किसी और पर ज़ाहिर क्यों करूँ!

5 मेरी जान में किसी और का दाख़िल होना मुश्किल

है मुझे तेरे सिवा कोई यार नहीं चाहिये।

6 जब तू मुझे पिलाने वाला है तो मैं किसी और से नहीं पीता, मुझे अपने जिस्म में एक रग भी होशियार नहीं चाहिये!

7 तेरा आशिक़ तुझ से अलग कैसे सुकून पा सकता है इसलिये मुझे कौसर-जन्नत और गुलज़ार नहीं चाहिये।

8 जो ग़ाफ़िल है हक़ीक़त भूला हुआ है वो दुनिया चाहता है जो अपने आपको अक़्लमन्द समझता है वो तेरी क़ुरबत चाहता है लेकिन मैं तो आशिक़ हूँ मुझे मेरे यार के अलावा कुछ नहीं चाहिये।

9 अपनी हस्ती से गुज़र जा शाही छोड़ दे, ऐ मोईन, जिसमें सर ना समा सके ऐसी पगड़ी नहीं चाहिये!

तालीम 61

1 इश्क़ का नूर चमका और दिल नूर से भर गया उस दिल के नूर से मेरा अन्दर और बाहर सब रौशन हो गया!

2 जिस्म और जान पर वो आग सा रब का नूर चमका (सीना) पहाड़ की तरह सब दिल के राज़ कहने लगा!

3 यार के हुस्न का नूर आसमान के किनारे से चमका "मेरे हर ज़र्रे पर दिल पर, अल्लाह की वहदत का नूर छा गया।

4 उसके दर पर जब गया तो जिगर छलनी हो गया जब उसकी तरफ़ बढ़ा तो पता चला के वो भी दिल से मुझे ढूंढ रहा था!

5 जब परदों को हटा देने के लिये उसकी तरफ़ बढ़ा तो अल्लाह का शुक्र है के मक़सद पा गया!

6 मोईन की मजलिस में चाहे कुछ वक़्त के लिये आ, बैठ और फिर देख के दिल की लहर से किस तरह नायाब मोती दिये जाते है।

तालीम 62

1 सिफ़त को ज़ात से हमने जुदा नहीं देखा जब भी देखा बस .ख़ुदा के सिवा नहीं देखा!

2 ये ना कहो के हक़ का जलवा ख़त्म हो जाने वाली आँख से नहीं देखा जा सकता ये बस भी क्या ख़ूब है .ख़ुद का पता नहीं देखा!

3 मुझसे ये ना पूछ के उस चाँद को कहाँ देखा बस जहाँ-जहाँ गया हर जगह वहाँ उसे ही देखा।

4 अलहम्दो-लिल्लाह जो चाहे बला मेरी जान पर दे-दे क्योंकि उसको देखने में बला बला नहीं रहती।

5 किसी भी तरह तू मुझे याद कर मैं ख़ुश हूँ जो कुछ भी मुझे मिला है सब अता ही है।

6 किसी तरफ़ भी मुझे तू ले चल हज़ार शुक्र तेरा, कि

अपने आपसे तुझको जुदा नहीं देखा!

7 मोईन की जान की ऊँचाई कम है बस मुस्तफ़ा के नक़्शे क़दम पर चलना है।

तालीम 63

1 दोज़ख़ का मुझे क्या डर और परदे से क्या डरना, उम्मीद और वह्म जा चुके है और भला ग़ैरों की फ़िक्र क्यों करूं!

2 दोज़ख़ के मालिक से कह दो के वो मुझसे ना उम्मीद हो जाये, मैं तो हर वक्त सर से पाँव तक उसकी याद में जलता रहता हूँ।

3 ना मुझे हूरों की ख़्वाहिश है ना जायदाद और ना ही अर्श की, मैं तो एक दूसरे ही इश्क़ में डूबा हुआ हूँ! सिरा मुझसे कह रहा है ऐ मोईन और ज़रा नज़दीक आ, मेरे मुँह को सूँघ और देख के हक़ीक़त में, मैंने क्या पिया है!

तालीम 64

1 ख़ुदा की फ़िक्र में हूरों और ग़ुलामों से आज़ाद हूँ। दोनो आलम की हर नेमत से भी आजाद हो गया हूँ।

2 ऐ तक़रीर करने वाले, मुझे और आशिकों को तू जन्नत का लालच ना दे। मैं तो उसको देखने में

जन्नत और जन्नत के दारोग़ा से आज़ाद हूँ।

3 मुझे असली यक़ीन भी है और देख लेने के बाद का यक़ीन भी है बहसबाजी, बुरे ख़्याल किसी भी शक और दलील से आजाद हूँ!

4 ग़ैब में हक़ तआला के सिवा कुछ नहीं है तो ख़ुद को देखने और नाम का ऐलान करते से आज़ाद हूँ!

5 उसे परदों में देखा लेकिन हक़ीक़त में वो ख़ुद ही है इसलिये इश्क़ और अक़्ल-कुफ़्र और ईमान सबसे आज़ाद हूँ।

6 मैंने अपनी कमर पर अमानत का भार उठा रखा है इसलिये हर बुराई, जहालत, गुमराही से आज़ाद हूँ।

7 मोईन को अगर दुनिया बुरा कहती है तो कहती रहे, हर अच्छाई और बुराई से आजाद हूँ!

तालीम 65

1 ऐ पिलाने वाले, तू मेरी जान को मिलन की पाक शराब चखा दे फिर तो हर घड़ी में दिल का ख़ून पीता रहूँ।

2 मुझे उसके क़दमों की ख़ाक अगर मिल जाये तो मैं सुरमे की तरह उसे आँखों में लगाऊँ।

3 उसके हुस्न के आगे फ़रिश्ते भी सजदा करें अगर इन्सान से मिट्टी और पानी का नक़ाब उतर जाये!

4 अक़्ल से पूछा के इश्क़ में तू कहाँ तक पहुँची वो बोली के शाही फ़रमान की छाप हूँ।

5 मोईन के दिल में इश्क़ की लहरें हरदम ज़ोर मार रही है बस इस ख़त्म हो जाने वाली दुनिया से छुपे हुए राज़ों को उठाता रहूँ!

तालीम 66

1 ऐ यार तेरे हुस्न को देखना चाहता हूँ मेरा मक़सद बस तू ही है जिसे देखता हूँ मैं।

2 मैंने अपनी आँखों को तेरे दीदार के हवाले कर दिया है अगर तू अपना चेहरा ना दिखाये तो बस तेरा दरवाज़ा देखता हूँ मैं।

3 दिल की आखों से तुझे इस तरह देखा है के सर की आँखों से तुझे नहीं पहचानता हूँ मैं।

4 दिल में तुझे देखने के लिये हज़ारों दरवाज़े खुले हैं, जिस भी दरवाज़े से चाहता हूँ तुझे देखता हूँ मैं।

5 अगर तुझे राह में देख लूँ तो वहीं मर जाऊँ ये मरने से भी अच्छा है के तुझे देखता हूँ मैं।

6 मोईन आज ही तेरा मिलन चाहता है महशर का इन्तज़ार नहीं चाहता हूँ मैं।

तालीम 67

1 जब अपने (में) होने के ज़ुल्म से आज़ादी पा गया उसी नूर से उसका नूर हो गया।

2 दिल का आईना जब इस ज़ंग से घुल गया के कोई अलग है तब जाकर मुझ पर छुपे राज़ ज़ाहिर हुए!

3 होने के ज़ुल्म की मिट्टी जल गयी चमक आ गई तेरे इश्क़ की आग में जलकर नूरानी हो गया!

4 दुनिया कहती है के ये रास्ता मुश्किल है लेकिन जब मैं इस रास्ते पर चला तो रब्बानी का फ़ज़ल ही हुआ।

5 मेरे अन्दर हरदम हज़रत जिबरईल जगमगाते हैं। मोईन मुझको ये .ख़बर भी नहीं कि मैं दूसरा ईसा बन गया हूँ!

तालीम 68

1 जब इश्क़ की पाक शराब से मस्त और .ख़ुमार में हो गया हूँ जो भी हुस्न देखता हूँ वो सब तेरे हुस्न का अक्स है!

2 तू चाहे कितने भी परदों में रहे लेकिन जब मैं दिल से नारा लगाऊँ तो सारे परदे हट जायें।

3 ये सात आसमान क्या अर्श से भी ऊंचे हैं मैं तो एक क़दम में सारी मज़िलें तय करता हूँ।

4 हमारी सारी उम्र तुझे देखने की उम्मीद में है अगर तुझे ना देख पाऊँ ये उम्र नापसन्द करूँ।

5 अब बस .ख़ुदा ही रह गया है मोईन की नज़रों में आसमान भी अब मेरी एक नज़र बर्दाश्त नहीं कर सकता।

तालीम (69)

1 जो तू मोहब्बत से एक क़दम मेरी तरफ़ चले मैं करम की राह से सौ क़दम तुझ पर फ़िदा हूँ!

2 छुपा हुआ ख़ज़ाना हूँ तू चाबी है, इसे खोल, मैं तेरे लिये ही तो ख़ज़ाने में छुपा हूँ।

3 मैंने अपनी सिफ़ातों पर तुझे पैदा किया है आईना तू मेरा है मैं .ख़ुद उसमें जलवा दिखा रहा हूँ।

4 तू अगर मिट्टी का ज़ंग दिल के आईने से साफ़ कर ले तो जान नारा लगाने लगे के नूरे .ख़ुदा हूँ!

5 अल्लाह के एक होने की दुनिया में, ना कोई यार ना पराया अपने होने के लिबादे को जब से अलग किया है।

6 दुनिया में छः तरफ़ मोईन धूम रहा है जब अपनी ही जगह नहीं हूँ तो क्या कहूँ, क्या हूँ।

तालीम 70

1 शाम का परदा उठ रहा है यार का चेहरा देख, सुबह की हल्की रौशनी है उसका नूर देख!

2 जन्नत की हूरों और ग़ुलामों की तरफ़ शायद तू ना देखे लेकिन अपनी ही आँख में, तू उसका देखना देख!

3 तेरी आँखें अगर उसके हुस्न से मिलन की क़ुव्वत नहीं रखती तो उसकी निशानियाँ दिल के आईने में देख।

4 उसके चमन से कोई भी बिना ग़म एक भी फूल नहीं ले सका है अगर तुझे फूल की तमन्ना है तो तकलीफ़ पहले देख।

5 वो मंसूर अल-हल्लाज की सूली के तख़्ते पर आवाज़ ना थी वो तो पानी और मिट्टी मंसूर अल-हल्लाज का था लेकिन वो बात अल्लाह की थी।

6 मोईन अपना सब कारोबार तेरे हवाले कर चुका बस अब तो लुत्फ़ो करम एक नज़र दिलदार देख!

तालीम 71

1 मैं तुझसे मिलन के लिये जान से भी चला गया अगर मिलन तू ना चाहे तो मैं बोल भी नहीं सकता।

2 फ़ना की लहर में ग़र्क हो चुका हूँ कुछ इस तरह के दुनिया की हर आरज़ू और शौक़ को छोड़ दिया!

3 सारी उम्र तेरे नामो-निशान के पीछे भागता रहा और सब .ख्वाहिशों का नामो-निशान सब छोड़ दिया!

4 अचानक उस जगह पर पहुँच गया जिसे मैं तलाश करता था जब वो मिला तो नामो-निशान छोड़ दिया।

5 आशिक़ और माशूक़ में कोई फ़र्क़ नहीं है लफ़्ज़ो में कहें तो इधर-उधर की सब बातों को छोड़ दिया।

6 मोईन ने अब खुली आँखों से तेरा हुस्न देख लिया इसलिये जन्नत और बहिश्त सब छोड़ दिया!

तालीम 72

1 जब आँखे भी ग़ैर हैं तो छुपे परदों से क्यों देखूँ, अच्छा तो ये होगा के जान की नज़रों से देखा जाये।

2 जब वो बिना आँखों के मुझे देखता है तो मुझ पर भी ये जरूरी है के छुपी हुई नज़रों से उसे देखा जाये!

3 अब वो वक़्त ख़त्म हो गया के मैं उसे देखने की चाहत रखता था अब तो ये हाल है सब वो ही है इसलिये कब और कहाँ से देखा जाये

4 मोईन तुझसे उसका नूर झलकता है अगर ये पर्दा भी उठ जाये तो खुली आँखो से देखा जाये।

तालीम 73

1 .ख़ुदा के इश्क़ में .ख़ुद को फ़ना किया मैंने तो बस एक ही क़दम में दोनो आलम तय किये मैंने।

2 जब इस ख़त्म हो जाने वाली दुनिया से एक क़दम बाहर रखा तब ही .ख़ुदा की तरफ़ इरादा किया मैंने।

3 नफ़्स से जल गये सातों आसगान के परदे जो .ग़ुस्ले तरीक़त के पानी से किया मैंने!

4 हमारे दिल में अक़्ल ने बात डाली थी इश्क़ की पाक शराब पीकर सबको उल्टी कर दिया मैंने।

5 मोईन के अन्दर मसीह की तरह पाक रूह चमकती है इस वजह से हज़ारों मुर्दा दिलों को जिन्दा कर दिया मैंने।

तालीम 74

1 जब कभी मस्ती में अपनी हस्ती से जो दूर रहता हूँ तो .ख़ुद मैं ही देखने और दिखने वाले दोनो को एक ही पाता हूँ।

2 पाक शराब, जाम, पिलाने वाला वाला जब सब मौजूद रहते हैं तो नूर की शराब से भरा हुआ ख़ुमार में रहता हूँ!

3 वहदत की पाक शराब का एक प्याला, ऐ मुझे पिलाने

वाले मुझे दे क्योंकि मैं भी इस दुनिया में मंसूर अल हल्लाज की तरह रहना चाहता हूँ!

4 पहले ही दिन मैंने वो पाक शराब पी है जिसमें ‘‘अनलहक़’’ का राज़ छुपा था जब मेरी ज़बान से कुछ निकलता है तो उस वक़्त मेरा ख़ुद पर क़ाबू नहीं रहता है।

5 मोईन उल्फ़त और इश्क़ के शहर से दीदार करके आया है इसलिये आशिक़ों के दिलों में मशहूर रहता हूँ।

तालीम 75

1 ख़ुदा की ख़ूबसूरती की पाक शराब से मैं ख़ुमार में हूँ जन्नत और हूरों के नशे से मैं बहुत दूर हूँ।

2 हमारे दिल से जो बात निकलती है अर्श तक जाती है अगर फ़रिश्तो के पर और बाल जल जायें तो मैं मजबूर हूँ!

3 मेरे वो साथ ही है लेकिन उसको पाने के लिये इधर-उधर घूम रहा हूँ। अजीब है के मिलन भी है और मैं उससे दूर हूँ।

4 इन्सान की शक्ल है लेकिन पाक रूह हूँ मैं, सुरज हूँ लेकिन मिट्टी में छुपा हूँ।

5 हटा के परदा ये कह दूँ के देख कौन हूँ मैं, लेकिन

दोनो आलम के जल जाने का डर क्योंकि नर हूँ मैं!

6 हमारी हुकूमत का तख़्त आसमान पर है पहले ही दिन से इस तख़्त पर बैठा हूँ मैं।

7 "अनल हक़" का नारा पहले ही दिन से लगा चुका हूँ मैं जब वो पाक शराब पी थी तब ही से .खुमार में हूँ मैं!

8 दिल के आईने पर जब भी निगाह करता हूँ तो जान जाता हूँ के देखने और दिखने वाला हूँ मैं!

9 ग़म का ये बोझ सब्र से ज्यादा है मोईन, कब तक ये उठाना पड़ेगा कि कमज़ोर हूँ मैं!

तालीम 76

1 वो तारीफ़ जो इनाम का दरवाज़ा खुलवा दे और मोती तू वो हासिल कर जो रूह को चमकाये।

2 तारीफ़ ऐसी हो के वो .खुद घर पर बुलवाये और जान इश्क़ की सीढ़ी से .खुद ऊपर चढ़ जाये!

3 तारीफ़ ऐसी हो के हुमा का साया तुझ पर पड़ जाये अल्लाह के दरबार से दिल और जान पर छा जाये!

4 अल्लाह की उल्फ़त पर निसार हो जा ऐ दिल, वो शायद तुझे क़ुबूल फ़रमाये।

5 दुनिया का निशान आदम और आदम का निशान वो है जब बदन होने की वजह वो है तो दिल ही

इसे पाये।

6 तन ज़िन्दा है जब जान से और जान ज़िन्दा उससे है तन जान को पहचाने वो दिल में नज़र आये!

7 मोईन अगर उससे मिलन चाहता है तो उस पर जान निसार कर दे, आशिक़ का इसी में फ़ायदा है के वो जान से गुज़र जाये!

तालीम 71

1 आशिक़ों की आँख से अगर अपने अन्दर की ख़ूबसूरती तू देख ले, तू भी मुझे जैसा परेशान हाल में फिरता रहे।

2 जब कि मैं उसके हुस्न का आईना हूँ तो मुझे अपने अन्दर हुस्न के सिवा कुछ नज़र नहीं आता!

3 आईना अपने हुस्न पर घमण्ड नहीं करता, वो तो अपने अन्दर तेरे जलवे देखता है।

4 मैं ऐसी पाक शराब चाहता हूँ जो मुझे हर चीज़ से अलग कर दे ताकि मुझे मंसूर अल हल्लाज जैसा मिलन हो जाये।

5 सुबह-सुबह सैकड़ों फूल खिलते हैं दिल पर मेरे, मोईन के मिज़ाज की मिट्टी को बुलबुल जैसा कर दे!

तालीम 78

1 कभी जो कोशिश मुझे यार के क़रीब करती है तो अर्श का बुलन्द रास्ता भी सर झुकाता है।

2 मेरे इश्क़ का जज़्बा मुझे .खुद ही खेंच लेता है मोहब्बत के हाथ के इशारे अगर कोई मुझे बुलाता है।

3 ‘‘मैंने ये पूछा के तेरा मिलन किस को होता है, ये कहा कि जो .खुद से अलग हो जाये उसको होता है।

4 मै चाँद हूँ कभी हू-ब-हू हो जाता हूँ जब कभी सूरज जैसा चेहरा छुप जाता है!

5 ग्रहण जो मुझ पर है सूरज की ग़लती की वजह से है मेरा मिट्टी का जिस्म जो बीच में आजाता है।

6 अगर दोनों आलम से मुझे जौ के बराबर भी कुछ ना मिले तो कोई ग़म नहीं क्योंकि मेरे दिल में मोहब्बत का बीज चमकता है।

7 मोईन दिल की जलन चाहती है जब लिखना, हमारे दिल की क़लम से धुआँ निकलता है।

तालीम 79

1 उसका हुस्न देखने के लिये हक़ीक़त को देख सकने वाली आँख चाहिये और हक़ीक़त को सुनने के लिये हक़ीक़त समझ लेने वाला कान चाहिये।

2 अगर तेरे जिस्म और जान को उससे मिलने की आरज़ू हो तो जिस्म को मिटाना जरूरी है!

3 जान को जब आवाज़ आये के आ लौट आ इस जिस्म के पिंजरे को तोड़कर उड़ जाना चाहिये।

4 अगर तुझे ये उम्मीद हो के तेरा दामन दोस्त पकड़ ले तो अपनी लाश को क़ब्र में छुपाना चाहिये!

5 मोईन हर वक़्त तेरे ग़म में रहता है अब तो इश्क़ के हकीम को हाल पर नज़र डालनी चाहिये!

तालीम 80

1 जब इश्क़ ने दिल और जान को मुझसे जुदा कर डाला तो अब दिल तेरे सिवा किसी को नहीं पहचानता!

2 तेरा दीवाना बनकर तेरे घर में सुबह तक रहता हूँ जब दिन होता है तो तू क्यों मुझसे अपना चेहरा छुपा लेता है।

3 जितना मैं उसके क़रीब हुआ वो उतना हो मुझसे पीछे हटा ये उसकी वफ़ा ही थी के मैंने जितनी वफ़ा की उसने उससे ज़्यादा वफ़ा की।

4 पाक शराब पिलाने वाले के हाथों से जब मैंने एक जाम पी लिया हमेशा के लिये ज़िन्दा हो गया मौत का रंग वहदत की पाक शराब से घुल गया!

5 अगर तू उसको देखना चाहता है तो मुझको देख ले

मैं उसका आईना हूँ हरगिज़ उसससे अलग नहीं हूँ।

6 मोईन जब वक़्त पाक जाम पीता रहता है अगर वो दम खेचें तो बिना आवाज़ पहाड़ को बुला सकता है।

तालीम 81

1 सामने से ना हटा के तू ज़रिया है मेरा जब में तेरा आईना हूँ मुझमे तेरा हुस्न ही ज़ाहिर है।

2 बन्दों का काम तेरी वजह से ही बनता है अपनी तदबीर से बन्दों की मुश्किलें कब हल होती है।

3 तू कहाँ? ऐ इश्क़ आकर अब पर्दा हटा दे, अक़्ल और समझ ने बीच में आकर रास्ते को रोक लिया है।

4 पानी और मिट्टी की कीचड़ में जिस्म गधे की तरह फंसा हुआ है जबकि मेरा बुराक़ कहीं और अस्तबल में है।

5 मोईन दोस्त के आगे ख़ाली हाथ जा रहा अब बस उसका करम मेहरबान चाहिये।

तालीम 82

1 तूने ऐ दिल पहले ही दिन उसे देखा या कुछ तो होश कर उस ही के हुस्न से हर चीज़ रौशन है देख!

2 होशियार ऐ देखने वाले मैं उस पिलाने वाले का मस्त हूँ पीने के किसी भी बरतन से मस्त नहीं हूँ देख।

3 अन्दर और बाहर की बातें इश्क़ के कानों से सुन, ज़ाहिरी सूरत में छुपा जमाले हुस्न देख!

4 होंठों को बन्द कर और जान के कोने को खोल फिर दिल के परदे में क्या बात होती है ये देख।

5 अगर इश्क़ में मर जाये तो कामयाब हो जायेगा, वो ही तेरी कोशिश है उसकी आह देख।

6 ऐ मोईन इस जान में कौन छुपा है, जान के अन्दर नज़र कर दिल में हुस्ने यार देख।

तालीम 83

1 आँखों से ख़ून बह रहा है जिगर का पानी सूख गया, ऐसी, आग आयी के सूखा और गीला और जान जल गये।

2 मेरे दिल में हर शाम नई आग लगती है सुबह की आह से कहीं सूखी जान का जिगर ना जल जाये।

3 ज़ख्म देता है वो जिगर पर और छिड़कता है नमक, अपनी मीठी हंसी से वो जिगर सूखी जान।

4 अपने पास दर्द की आवाज़ और सुबह की आह के सिवा कुछ नहीं है देखकर भाग जाते है सब जिगर और सूखी जान!

5 मोईन जब इश्क़ की आग में शोले निकलते है तो दिल से दोज़ख़ की आग की तरह सब जल जाता है!

तालीम 84

1 दर्दे दिल हर शख़्स से अपना छुपाना चाहिये, घास से आशिक़ के दिल का दर्द ना कहना चाहिये।

2 मैं अपने ही दिल से कभी ग़म का फ़साना कहता हूँ दिल ही जब फिर जाये तो ख़ामोश रहना चाहिये।

3 हर किसी में जाकर आ जाता हूँ हर घड़ी वापस, जब तेरा जांबाज़ हूँ वापस ना आना चाहिये।

4 जिस्म से दिल को अलग कर ताकि जान को शिकार करूँ बाज़ को अपने परों की ताकत के बारे में गिद्ध को ना कहना चाहिये।

5 तेरे आगे यूँ तो मेरे गुनाह बे-हिसाब है अगर तू कहे तो तेरे सामने ही सुनाना चाहिये।

6 मोईन लोगों से कम कहो राज़ उसके इश्क़ का, हर किसी को शाहों का हाल ना सुनाना चाहिये।

तालीम 83

1 जो परदे के पीछे हसीन चेहरा दिखाये वो कौन है चेहरे से जो हर वक़्त परदा हटाये कौन है।

2 तू भेंगो की तरह एक को दो कब तक देखेगा अलग-अलग सूरत और कपड़ो में जो आये कौन है।

3 जाम को हथेली पर रखकर वो अपना हुस्न देखे

शराब के अन्दर जो कैफ़ियत और मस्ती बढ़ाये कौन है।

4 से यक़ीन है के मेरा दोस्त छः दिशाओं से भी परे है जो कि हर दम दूसरी राहों से आये कौन है!

5 इश्क़ के अन्दर और दोनो जहाँ की रूह में, देखता है जो दिल में, दिल से मिटाये कौन है?

6 ज़ुल्म का ग़म और जुदाई की शाम दिल पर छा जाती है जब, जान की ऊँचाई पर चाँद सा चेहरा दिखाये कौन है।

7 बुलबुल की तरह अपने यार पर कौन आशिक़ है मोईन, वहदत के गुलशन में मकान का मालिक कौन है।

तालीम 86

1 आ रही है ख़ुशबु किधर से के रूह और दिल मस्त है ये इश्क़ की ख़ुशबु है या यार की जुल्फ़ों की ख़ुशबू है!

2 जिस्म सारा जान बन गया है और जान दिल को तलाश कर रही है लब पर लब रखे हुए इस वक़्त वो दिलदार है!

3 आशिक़ के दिल को वो हमेशा तेज़ चाक़ू से काटती है तेज़ चाक़ू के ज़ख़्म को ना देख, ये देख कितना

प्यार है।

4 वो दिल कौन सा है जो यार के मिलन को बैठे, मेरा दिल बुरा है लेकिन दिलदार के दर का पत्थर है!

5 जब से मोईन की जान पर वहदत की पाक शराब छिड़की है (याहू) के नारे की हर तरफ़ शराब झंकार है।

तालीग 87

1 दुनिया के साथ तन है और .ख़ुदा के साथ जान है तन ज़मीन में गिरफ़्तार है और रूह सातवें आसमाँ पर है।

2 तन दुनिया के हादसों के तीरों का निशाना है और रूह ख़ास तन्हाई में दोनों आलम के मालिक के पास है!

3 सर की अगूंठी पर एक मोती जड़ा हुआ था वो यहाँ से अलग होकर फिर अपनी असलियत में जाकर मिल गया।

4 भाप बन कर दरिया की बूंद उठी और बादल बन गयी फिर वो दरिया में क़तरा बन कर गिरा और लहर बन के उसके साथ बहने लगा।

5 अगर हवा बादल से दूरियाँ में बूंद ना गिराती तो क़ीमती मोती सीप में कैसे होते।

6 (ला) के एक गौहर को दुनिया के बाज़ार में बेचा और .ख़ुद ही बिकवाने वाला और .ख़ुद ही छुपा हुआ ख़रीदार बन गया।

7 ऐ मोईन परदे के पीछे सुल्ताने .ग़ैब को देख, वो आशिक़ों के नाम से .ख़ुद ही इश्क़ करता है।

तालीम 88

1 तेरे इश्क़ की आग जब से मेरी जान में लगी है मेरा क़रार और आराम सब मुझसे दूर हो गये।

2 जब के मेरी जान की रग तेरे इश्क़ से ज़ख़्मी है ये ताज्जुब है दिल ज़ुल्म से फ़रियाद करे!

3 ये दुनिया कहती है के ये शहर (जिस्म) क्यों वीरान हो गया ये वीरान नहीं है उसने आबाद किया है!

4 एक लम्बे व.क्त से मैं क़ैद में था .ग़ैब के हाथ ने आकर मेरे सारे बन्धन खोल दिये।

5 महफिल को पिलाने वाले ने आकर मयखाने का दरवाज़ा खोल दिया और मुझे पाक शराब के हज़ारों जाम दिये!

6 जब से पिलाने वाले ने अपने चेहरे से नका.ब हटाया - मेरे होने के पहाड़ को हर तरफ़ से बे-बुनियाद कर दिया।

7 मोईन ने जो भी पाक और साफ़ जाम पिये थे उनसे

भी उसकी प्यास कम ना हुई।

तालीम 89

1 उसकी जुदाई मे, कैफ़ियत में एक बार दम खींचा, उसके लबों को जब चूमा तो आह और धुआँ और बढ़ गये!

2 सोचता था के जब उसे देखूंगा तो दिल का सब हाल कहूँगा ये पता नहीं था के बेज़ुबान हो जाऊँगा!

3 मैं उस बे-निशान को ढुँढ़ने में .खुद बेनिशान हो गया आख़िरत में भी उस बेनिशान में बेनिशान ही रहूँगा!

4 बोले वो के इधर-उधर क्या ढूँढता है ख़ुद में देख तेरे जिस्म में जान बनकर ज़ाहिर और छुपा मैं ही हूँ।

5 अपने होने को धोकर चमका के मैं ही छुपा हूँ और हर वक़्त ज़ाहिर भी मैं ही हूँ।

6 ऐ मुल्ला तू आख़िरत के बारे में मुझे मशोरा ना दे मैं चाहता हूँ के दुनिया में इश्क़ में बदनाम हो जाऊँ।

7 ख़ाक का ज़र्रा हूँ सूरज से मेरी दोस्ती है अपने क़दमों को उठाकर मैं आसमान पर जाता हूँ!

8 जबकि उसने .खुद फ़रमाया (अपनी रूह) और मोईन में चमका है तो मैं चाहता हूँ के हज़रत जिबरईल मेरी जान बन जायें!

तालीम 90

1 आसमान की दुल्हनें मेरे इस्तक़बाल-स्वागत को आती हैं जब मैं ग़ैब की दुनिया की तरफ़ रुख़ करता हूँ।

2 वजूद के ज़ाहिर होने के वक़्त का राज़ तुझे सुनाता हूँ राज़ वालों ने जो राज़े इश्क़ मुझसे कहा!

3 इस दुनिया में जल से जो क़ैद है वो भी मेरे जैसे तेरे हुस्न का तलबगार है।

4 बदन का ज़ंग धुल गया जान में वो ही चमक रहा है अब पानी और मिट्टी में तेरी हक़ीक़त ज़ाहिर हो गयी!

5 उमर से क्या वफ़ा तलाश करूँ के जो साँस जाती है वो उमर की तरफ़ लौटकर नहीं आती है।

6 हर साँस के साथ उसकी तरफ़ क़दम बढ़ा रहा हूँ के रास्ता लम्बा है और उम्र कम होती जाती है।

7 जान का सामान भी हैरत से ख़त्म होता जा रहा है के एक ग़म मिटता है दूसरा पैदा हो जाता है।

8 जो आसमान साथ ना दे मोईन तो ख़ुदा की तरफ़ रुख़ कर शायद कभी तेरे काम बनाने वाला अपनी करम की निगाह तर तेरी तरफ़ उठा दे।

तालीम 91

1 ऐ आशिकों मैं इश्क़ की पाक शराब का प्याला हूँ इस परी को देखकर अपने से बेगाना हूँ।

2 पहले ही दिन मेरे कान में होठों से कुछ कह दिया गया था इसलिये सब की ज़ुबाँ पर क़यामत तक के लिये अफ़साना हूँ।

3 मैं बोला चेहरा दिखा उसने कहा के क्या मेरा हुस्न देखने को आँख चाहिये वरना मैं कोई छुपा हुआ नहीं हूँ।

4 जब से मैंने बुत के अन्दर बुत बनाने वाले के हुस्न को देखा है बुत के दरवाज़े पर सर रखकर सबसे बेगाना हूँ!

5 उसका हुस्न मुझे अपनी तरफ़ खींचता है जैसे वो एक जलती शमा हो और मैं परवाना हूँ।

6 टूटे हुए दिल से मैं बोला के तू कहाँ और वो कहाँ, बोले वो है मेरी दोलत और मैं वीराना हूँ!

7 जिस्म दरिया, दिल को सीप और दिलबर को मोती समझता था मैं, पर नहीं दरिया है वो और मैं तो अन्दर दाना हूँ!

8 जिस्म जबकि दिल हुआ, दिल जान हुआ तो दिलबर रूह है, ना बदन, ना दिल, ना जान रखता हूँ, वो जानाना हूँ मैं।

9 मेरे और मुझे पाक शराब पिलाने वाले के बीच जितने पर्दे है वो सब नारों से हट जायें वो दीवाना हूँ।

10 मोइन अब जब उसे जानकर मैं यार में मिल गया, दूसरो के बीच अब पराया हूँ।

तालीम

1 जिस्म जब मिट्टी है, इसको ख़ाक होना चाहिये और रूह आसमान की है तो इसे आ आसमान पर रहना चाहिये।

2 अगर तू इश्क़ की आग में जलना चाहता है तो तुझे खोटे माल की तरह जलकर पाक होना चाहिये!

3 इश्क़ के रास्ते में जो रुकावटें आयें उनको पारकर, कब तक ये आलस, चालाक रहना चाहिये।

4 मोईन अगर तू अपने आप को नौवें आसमान पर देखना चाहता है तो लौलाक के मालिक की रक़ाब से बंध जाना चाहिये।

तालीम 93

1 जिस्म की चट्टान से दिल का झरना रूका हुआ है फावड़ा उठाकर इस पत्थर की चट्टान को तोड़ दे।

2 ये जो तेरी हस्ती है इसमें ज़िंदगी का पानी छुपा हुआ है अपने आपको मछली बनाकर इस ज़िंदगी के पानी

में बहा दे।

3 ये क्या दर्द है जो मछली पानी में जल रही है, इसके बावजूद के दिल दरिया की तह में डूबा हुआ है!

4 मैं मछली की तरह तवे पर क्यों भुन रहा हूँ, इसकी वजह ये है के इश्क़ की आग छुपी हुई है।

5 रात-दिन सीने के अन्दर मेरा दिल जल रहा है जैसे बरतन के अन्दर सैंकड़ो चिराग़ जल रहें हों।

6 जब तू ख़ुदा का आईना है भले-बुरे को ना देख उस के अन्दर के हुस्न को दिल में देख और हैरत कर!

7 जब मोईन का मिस्कीन दिल तेरा आईना है ऐ करम करने वाले तो अपने आईने को अपने नूर से चमका दे।

तालीम 99

1 मैं नहीं कहता के (मैं हक़ हूँ) यार कहता है के कह, जब नहीं कहता हूँ मैं दिलदार कहता है के कह।

2 पहले जो कहता था वो, ताकीद करता था ना कह, फिर ना जाने किसलिये इस बार कहता है कह!

3 जो ना कहना चाहिये था ज़ाहिदों के सामने, बे-तहाशा बाज़ार में कहता है के कह!

4 मंसूर अल-हल्लाज का राज़ छुपाने की मुझ पर हद नहीं है क्या करूँ, फाँसी का फंदेदार कहता है के

कह!

5 मैंने पूछा इस जहाँ में राज़े दिल किस से कहूँ जब दीवार भी बरदाश्त नहीं कर सकती, फिर भी कहता है के कह!

6 इश्क़ की आग ने मेरे दिल पर झण्डा लगा दिया है हज़रत मूसा ने जो कहा था यार कहता है के कह!

7 मैं नहीं वैसा तो मेरी ख़ाक में है क्यों चमक, चाहता हूँ ना कहूँ पर राज़ कहता है के कह!

8 ऐ हवा तुझसे वो पूछे कुछ मोईन कहता भी था दूर करने को दुई ग़म-ख़्वार कहता है के कह!

तालीम 95

1 ये जो सात सितारे आसमान पर चमक रहें हैं जान का नूर अगर चाहता है तो तारों के ऊपर तारा हो!

2 अगर तुझे कम नशा नहीं चाहिये तो जाम और पाक शराब की चाहत मत कर प्याले तोड़ दे और पाक शराब बनाने वाले में मस्त हो जा।

3 बदनामी के कूचे में दिलबर से जुड़ गया इज़्ज़त के कपड़ो से कह दो के उनके सैंकड़ो टुकड़े हो जायें।

4 तू कहे, बेसहारा हो, सहारा मैं बनूँ, वल्लाह मैं बेसहारा हो गया तू सहारा बन। आमीन!

5 झूले पर अपनी दुकान मोईन कब तक रखोगे, अपनी ख़ाक का बिस्तर लपेटो ताकि ये यार का पालना बन सके!

तालीम 96

1 मेरा जिस्म आईना बनकर तुझको ज़ाहिर करने वाला बन गया, ये जिस्म इस क़ाबिल तो नहीं था तेरी नज़रों ने क़ाबिल कर दिया!

2 अपने चेहरे पर तेरा ही हुस्न लिये फिरता हूँ मैं, जिस्म का अब ज़र्रा-ज़र्रा तुझको ज़ाहिर करने वाला बन गया!

3 जब कहा अपना पता दीजिये तो कहा .ख़ुद से अलग हो जा इसके बाद देख के तेरे दरवाज़े पर कौन खड़ा है।

4 अलग-अलग होने को छोड़कर मोइन एक होने में अपनी जगह बना जब .ख़ुदा ने सर पर तेरे इज़्ज़त का ताज रख दिया।

तालीम 10

1 अगर तू यहाँ वहदत के राज़ का यक़ीन नहीं करता तो होश के कान से और और अपनी जान की जान से सुन!

2 नूर से ज़ुल्म को अलग कर ले और रास्ते से अलग-अलग होने को ख़त्म कर दे फिर उसके बाद वहदत का राज़ जो छुपा है अपनी जान से देखा।

3 आशिक़ों की ज़रूरत और माशूक़ के नख़रे क्या पूछिये, ज़बान को फूल की तरह गूँगी कर ले और जान से सुन!

4 जो अब आता है उस आलम से मेरे, कान में हरदम, बाद में तेरी बातें सुनुँगा अभी तो मेरी ज़बान से वो सुन!

5 हमेशा के लिये ज़िन्दा कर देने वाली पाक शराब पी, ऐ मोईन और चुप हो जा, मिलन और जुदाई का क़िस्सा लाल नगीने की तरह जो है उससे सुन।

तालीम (98)

1 जिसकी वजह से तू इस फ़ानी दुनिया से जुड़ा हुआ है उससे अलग हो जा और उस तरफ़ चल जो बुलन्द आसमानो से भी ऊपर है!

2 हक़ीक़त के इल्म की तलाश दुनिया की किताबों में मत कर अगर हक़ का इल्म चाहिये तो आसमान के ऊपर की किताबों में जा।

3 जब तू मेरी तरफ़ आयेगा तो मैं तुझे राह दिखाने वाला बनूँगा मेरे साथ चल और किसी को राह में ना

ले।

4 दुनिया के एक-एक बंधन अलग कर दे ऐ मोईन, जिस जगह से तू आया है बस उसी तरफ़ चल।

तालीम

1 मेरी जान के आईने में तेरी ख़ूबसूरती नज़र आयी, दिल से दुनिया निकल गयी बस अब तेरा ख़्याल है।

2 जुदाई की तकलीफ़ मुझे आज ही क़ुबूल है ताकि इस वजह से तुझसे मिलन हो सके।

3 मेरा मक़सद अर्श से भी बुलन्द है इसीलिये मैं तेरे परों में चींटी की तरह लिपटा हूँ!

4 .ख़ुद से बेकार नहीं हो सकता हरगिज़, कमाल रखने वाला, हक़ीक़त में अपने हुनर से रुक जाना ही तेरा कमाल है।

5 जो हक़ के आशिक़ हैं वो मोईन को महफ़िल में अपना सदर बनाते है कमाल रखने वाले आशिक़ पिछली सफ में कब बैठाये जाते है।

तालीम

1 पानी और मिट्टी से गुज़र कर हक़ीक़त के दिल और जान की तरफ़ चल और फिर देख के तू कैसे अल्लाह से जुड़ा हुआ है।

2 जिसने अल्लाह को पहचान लेने, जान लेने के लिये कोशिश की वो अक़्लमन्द हैं बाकी ग़ाफ़िल हैं बेहोश हैं दूर है ख़ुदा के राज़ो से!

3 जब मन्सूर अल-हल्लाज "मैं हक़ हूँ" कह रहे थे तो अपने आप में कब ये सूली पर जो आवाज़ आती थी वो तो यार की थी।

4 उसका यार बन कब तक अपना यार रहेगा तू उस यार की चमक की वजह से ख़ुदको पहचान!

5 अच्छे और बुरों से ये दुनिया भरी है ये सब उसी का जलवा है मोमिन और काफ़िर सब नूर और आग से ताल्लुक़ रखते हैं।

6 आदमी के आईने में वो अपना हुस्न देखता है फिर उठता है, गिराता है आदमी को, उसके इस काम से मैं हेरान हूँ।

7 इस तन को जलाने के लिये एक शोला बहुत है लेकिन वो ही शोला उसके लिये रौशनी बन जाता है जो ख़ुदा के राज़ो को जानने वाला है।

8 आशिक़ पर तेरा हुस्न ज़ाहिर होता है जिस पर हक़ की नज़र हो तो इस हक़ीक़त से मना नहीं करता!

9 तू कभी आग में चमका और कभी सलीब पर, गोल ज़ुल्फों से कभी और कभी जनेऊ से तेरी झलक आती है।

10 ऐ मोईन! एक ही ग़ज़ल में पहले दिन के सब राज़ कह दे, ना होने की बात को बोलने वाले आईने से सुन!

तालीम 101

1 जब सीप से मोती जुदा होता है तभी हथेली से उसका मिलन होता है इसी तरह जब तक वहदत को लहर में इन्सान ना डूबे .खुदा नहीं मिलता!

2 दिल के आईने में अपना हुस्न दिखलाता है, दोस्त, जिस्म की मिट्टी ही परदा है जान की आँख का।

3 अक़्ल वाले को ये कब पता है के मिट जाने में ही अमर हो जाना है, अक़्ल तो इस फ़ायदे को भी नुक़सान समझती है।

4 मकड़ियों के जाल से हुमा परिन्दे को परेशानी नहीं होती इस जाल में तो शहद की मक्खियाँ फंसती हैं।

5 अपनी .खास रूह से इन्सान में चमका है वो, वरना फ़रिश्ते आदम को सजदा क्यों करते।

6 ये जहाँ मेरा है ग़म अपना ना कर तू ऐ मोईन, इस दुनिया का क्या ग़म करू अब ये रहे या ना रहे।

तालीम 102

1 पहले बनाने वालों में सबके उस्ताद ने जहान बनाया

फिर उसकी में क़ुदरत से दो आलम बने!

2 जिस तरह क़ुरआन में बिस्मिल्लाह हक़ ने है लिखी आपको भी एक सुर्ख़ फल की तरह अपने साथ रखा।

3 आपके सब दुश्मन सब जले दुश्मनी की आग में, और ईमान के नूर से सब दोस्तों को इज़्ज़त मिली!

4 ऐ आलम के मालिक सबकुछ आपकी वजह से बना ताक़, मेहराब और सातों आसमान की मंज़िलें।

5 सब लोग वहदत के दरिया में मोती तलाश करते हैं और हक़ ने जिस्म में जौहर छुपा दिया है!

6 रहमते आलम मोईन पर रहम .ख़ूब फरमाइये, शैतान के चक्कर में दोनो आलम फंसे हैं!

तालीम 103

1 करम की लहर का एक क़तरा आलम पर है छिड़का हुआ, हक़ ने इसी क़तरे से दरिया-ए-जिस्म में फैला दिया।

2 सूरज बेअसर हो गया कुछ भी असर ना रहा जबकि रात की मोहब्बत और ख़िदमत देख के हवा भी शबनम छिड़कती है!

3 जैसे कोई बादशाह दो घंटे मय पीकर फेंक दे इसी तरह .ख़ुदा ने आदम के हक़ीक़त के दिल पर इश्क़

छिड़क दिया।

4 आशिक वो दीवाना हूँ मैं जो पूरा मयख़ाना पी जाता है ये वो ही मस्ती है जो जाम मैंने पिया था!

5 जब इश्क़ की आग आसमान पर अचानक भड़कती है ऐसा लगता है जैसे ज़ख़्मों पर नमक छिड़का हो।

6 अब हक़ीक़त के यक़ीन का सूरज मोईन के दिल पर चमका है हर दिल पर ये .ख़ुदा का फैज़ नहीं होता!

तालीम 104

1 कुछ ऐसा मज़ा इस इश्क़ ने जिस जान को चखाया, आराम गया उसका, पड़ा क़हर का साया!

2 पहला ही क़दम राह पर जो सालिक ने तय नहीं किया, रास्ता तो बहुत चला, मंज़िल को नहीं पाया!

3 जब कोई जानता ही नहीं तो ज़बान से क्या बोलूँ, इश्क़ ने अपने होंठों से जो नुक्ता मुझको सुनाया!

4 क्या जाने तू क्या है तेरी पलको पर ये मोती, ये आँसूओं की सूरत है शाह का ख़त आया!

5 हमेशा मस्त मोईन पहले दिन को मजलिस से आया हक़ ने जो इश्क़ की पाक शराब का था प्याला पिलाया!

तालीम

1. अगर तू हक़ीकत की नज़र से अपने जिस्म और जान को देखे दुनिया की हर चीज़ तू अपने जिस्म में छुपी हुई देख सकता है।
2. अपने दरिया की गहराई से अगर तू इश्क़ का मोती ले आये तो हक़ ने जो दौलत तेरे अन्दर छुपा रखी है वो तुझे साफ-साफ़ दिख जाये!
3. अगर तू कोशिश करके इश्क़ की हद तक पहुँच जाये तो अपने अन्दर दुनिया के तख़्तो-ताज देख सकता है
4. फ़रिश्तो की तरह यार की .खूबसूरती में गुम हो जा इब्लीस ना बन जो सजदे में उसे बदगुमान होकर देखे!
5. इस मिट्टी के घर से बाहर आ जिससे मौला का नूर देख सके इस ख़ाक के घर में रहकर तू कब नूर तक सुर्ख़ और नीला आसमान देखता रहेगा।
6. अगर दिल के आईने को तू अंधेरे से साफ़ रखे तो, .खुदा के हुस्न का जलवा तू अपने में ज़ाहिर देखे।
7. दुनियाँ की तरफ़ से आँख बंद कर ले और दिल की आँख खोल, दोस्त के होने को फिर तू अपनी जान की रंग में चलता देख ले।

8 अक़ीदत के साथ हक़ीक़त की शराब पीने वालो की महफ़िल में मोईन के साथ बैठ ताकि सुनने को, बोलने को, नक़ल को असल को, प्याले को जान की आँख से देख सके!

तालीम 106

1 इश्क़ का बाज़ है तू क़ैद में आराम ना कर, उसी की तरफ़ परवाज़ कर जो वतन तू चाहे!

2 मीठा बोलने वाले से मैंने एक गहराई की बात पूछी, उसने कहा कि जो भी गहरी बात और हुनर चाहता है क़ुरआन से सीख ले!

3 अर्श पर भी दौड़ता-फिरता रहा के मेरा यार कहाँ है वो बोला के मैं तो तेरे साथ हूँ बस तू मुझसे मिलन चाहने लग!

4 उसने परदे को उठाकर कहा नज़दीक तो आ पाक शराब का प्याला थाम अगर तू हैरत, शर्म शिकन देखना चाहता है।

5 ''मैं हक़ हूँ'' की डोरी को थाम ले के ये हमेशा के लिये मिटने की राह है। फ़ना हो जाने की सूली पर तू क्यों सूली और रस्सी चाहता है।

6 घर से यानी जिस्म से सबको अलग करके तू यार को तलाश कर, ये तो नामुमकिन है के पहले वो तुझे

कहीं और दिख जाये!

तालीम 107

1 हुस्न का नक़ाब तो मिट्टी में मेरे डाल दिया, जिस्म जबकि ग़ैब में मेरा बनाया था।

2 इश्क़ का जो ग़म मैं तेरे सह रहा हूँ वजह ये है के मैं तुझसे मिलन चाहता हूँ!

3 तेरे सिवा और किसी से ना राज़े दिल का कहुँ, मेरा राज़ सुन के तू बेहतर राज़ रखने वाला है।

4 पहले दिन ही मोईन तेरी ख़ाक पर पड़ी थी नज़र, उम्मीद है वो नज़र से नहीं गिरायेगा!

तालीम 108

1 आँखों में जमा होकर ज़ाहिर जो हुआ वो छुपा हुआ कौन है? जो अक़्ल में ना आये आख़िर वो सब जगह ज़ाहिर कौन है?

2 जबके तुने हर हक़ीक़त बनने वाली चीज़ों पर ज़ाहिर कर दी अलग-अलग सूरतों और लिबासों में ज़ाहिर वो कौन है?

3 ना ख़बर रखे बदन की, ना जान ही को कुछ असर, फिर भी रूह की मिसाल की तरह छुपा हुआ और ज़ाहिर वो कौन हैं?

4 जब जान की रग में शहद और मिठास की तरह तू बह रहा है मेरी मीठी जान में जान के साथ कौन है?

5 तूने क़ुरआन में कहा, मैं बेज़बान करता हूँ बात, जो सुनता है, हर ज़बान से बोलता है ज़बान के पीछे वो कौन है?

6 तेरी लगन में दीवानो की तरह हर वक़्त फिरता रहता हूँ ताज्जुब है के जो हर पल मेरे साथ है वो कौन है।

7 बोले वो के ऐ मौइन कब तक हर तरफ़ घूमता रहेगा उसको अपने में तलाश करो तो जान जाओगे के वो कौन हैं।

तालीम 109

1 तू ही अल्लाह की ख़ूबसूरती की चमक और अल्लाह को ज़ाहिर करने वाला है ताकि ये पता लग जाता अगर तू अपने दिल के आईने को चमका लेता।

2 अपने होने के पेड़ को उल्फ़त की आग में जलाकर पाक हो जा, जब तक नहीं जलेगा अंधेरे में ही रहेगा।

3 फ़ायदे और नुक़सान पर तेरा कोई बस ही नहीं है, इस वक़्त नुक़सान होता है जब तू फ़ायदे की सोचता है।

4 हक़ीक़त में जब तू ग़ैब में था तो जिस्म से बंधा हुआ नहीं था जब तू दुनिया में आया तो तेरा एक नक़ली नाम रख दिया!

5 तू समझ तेरी हक़ीक़त एक सफ़ेद पानी की बूंद है हदों पर पहुँचने वाले सब कहते है के इश्क़ तेरे होने की वजह है।

6 अपनी अहमियत को ऐसे समझ के तू ख़ास मेहमान है यहाँ पर, सबकुछ तेरी वजह से है और तू ख़ुदा का मक़सद है!

7 आदम और हव्वा का आलम में नामो-निशान भी ना था वहदत के महल में ख़ुदा के साथ तू ही तो था!

8 फ़रिश्ते आदम को अर्श पर हरागज़ सजदा नहीं करते अगर वो आदम के हक़ीक़त के दिल में ख़ुदा के नूर को ना देख लेते!

9 ज़र्रे-ज़र्रे से तू मंसूर अल हल्लाज के नारों को सुनें, अगर यार अपने चेहरे से परदे को हटा दे।

10 मर रहा हूँ तुम पर मैं तुझसे बचना भी मुश्किल है इश्क़ का बीमार सही होने की उम्मीद कहाँ रखता है।

11 ये मोइन ग़म की शिकायत तो नहीं कर रहा लेकिन सोचिये हाथी के बोझ का सिरा, मच्छर कैसे खींच सकता है।

तालीम 110

1 दोनों आलम में अल्लाह के सिवा कोई नहीं है सैंकड़ों सबूत है लेकिन इस राज़ से कोई वाक़िफ़ नहीं है।

2 मैं और तू के राज़ का नुक्ता हम सभी से छुपा है सैंकड़ों हैं, लेकिन इस राज़ को कोई खोलकर बयान नहीं कर सकता!

3 आशिक़ और माशूक़ दोनो को .ख़ुद में से .ख़ुद पैदा किया क्योंकि इन दोनो पर और कोई निगाह रखने वाला नहीं है।

4 इश्क़ के दावों में कोई बहस नहीं कर सकता जबकि साथी है।

5 जान और दिल से तेरा यार मोईन सह रहा है ये शुक्र की बात है ये अकेला नहीं है तू साथ है!

कतआ

1 आशिक़ को हरदम यार के दीदार की फ़िक्र है! माशूक़ की हर अदा नये तरीक़े की है।

2 हम करें जुर्म ओखता और वो करे लुत्फ़ अता हर कोई वो काम करता है जिसकी उसे तौफ़ीक होती है!

तालीम 111

1 मस्त होकर तू जो अपने दिल की आँख को खोल दे, दोस्त का दीदार तू पहली नज़र ही में करे!

2 अगर तू महबुब के राज़ को हासिल करने में सुस्ती करे तो इससे बेहतर है तू इस दुनिया से परदा कर ले!

3 नाज़ और नख़रे दिखाकर तू मक़सद को कैसे पा सकता है .ख़ुदा को जान लेने की राह तो सर झुका कर तय करते है।

4 अगर तू हक़ीक़त में अयाज़ की तरह हो जाये तो सुलेमान के तख़्त पर बैठ सकता है। ऐ मोईन अगर तू जान से महमूद की ख़िदमत करे।

क़तआ

अली की खासियत जबान से बयान हो, नामुमकिन
मिट्टी के छोटे बरतन में दरिया बहने लगे, नामुमकिन
ख़ासियतों का बयान हो सके ये, नामुमकिन
ज़माने में इन जैसा कोई और हो जाये ये, नामुमकिन

तालीम 112

1 ऐ वहदत की पाक शराब पिलाने वाले तूने ये प्याला

कैसा दे दिया के हर पल मेरे दिल से आती है (हू) (हॉ) की आवाज़!

2 दावा ना कीजिये ऐ मोईन दीवान ये अनमोल है नुक़्ते के राज़ की किताब का अभी तो एक वरक़ भी पूरा नहीं हुआ!

दो मिसरे

हुसैन शाह भी हैं और बादशाह भी हैं।
हुसैन दीन भी हैं और दीन की पनाह भी है
कटाया सर ना दिया हाथ में यज़ीद के हाथ
हुसैन बा .ख़ुदा बुनियादे ला इलाह भी है।

तालीम 113

1 तेरी जुदाई में सब्र नामुमकिन है, हर एक लम्हा मेरे दिल में बार-बार तू आ!

2 जो एक परदा उठा दे तो गुम हो मेरा दिल, जो चेहरा दिखा दे, रहे ना दिल और जान की दुनिया!

3 .ख़ुदा के मस्त की झूठी शराब हो जो नसीब, तो हर हिजाब उठे तेरी जान और दिल का।

4 वो आधी घूंट मचाये शोर है अनल-हक़ का ख़ामोश रह तू ऐ मोईन देख .ख़ुद को तू है कहाँ।

दो मिसरे

हुसैन आप ने वो काम किया के जिसने
रिसालत के बाग़ को बहारों से भर दिया!
पयम्बरों में किसी से जो हो ना सकता था
क़सम ख़ुदा की हुसैन आपने वो काम किया।

तालीम 114

1 वो इश्क़ के शौक की लपट मिट्टी से जो उठती है, तेरी ज़बान की चिंगारी की ही कहानी है।

2 बदन है दायरा, दिल नुक़्ता बीच में है, जो दिल हो दायरा तो नुक़्ता बीच में है।

3 ये पूछा किस लिये परदे में है तो उसने कहा, तेरा वजूद ही मेरे लिये बहाना है।

4 मोईन मेम्बर पर खड़ा होकर इश्क़ के नुक़्ते की बात किये जा तू इस ज़माने में इश्क़ के चमन की बुलबुल है!



ख़ादिमे तसव्वुफ़

सरकार
सूफ़ी ग़यासुद्दीन शाह

कादरी, शुत्तारी, चिश्ती, हाशमी, हुसैनी, महबूबी



پڑھنا ہے، پڑھانا ہے، سیکھنا ہے، سکھانا ہے
خود کو اور سب کو آگے لے جانا ہے

पढ़ना है, पढ़ाना है, सीखना है, सिखाना है।
खुद को और सबको आगे ले जाना है।

چاہے آدھی روٹی کھائیے
لیکن بچوں کوضرور پڑھائیے

चाहे आधी रोटी खाइये।
लेकिन बच्चों को ज़रूर पढ़ाईये।

मरकज़े तसव्वुफ़

दरगाह हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन
बा-इख़्त्यार काकी (कु.सि.अ.)

1011-E-First, दरगाह शरीफ, महरौली, नई दिल्ली-110030
फोन : 07838116286, 011-26646216

दुआए बा-इख़्त्यार काकी कु.सि.अ.

कुत्बे दीं, कुतबुल हिन्द, बा-इख़्त्यार काकी के वास्ते
खोल दे मेरे लिये तरक्की के सब रास्ते

मरकज़े तसव्वुफ को, तसव्वुफ का मरकज़ दे बना
इल्मे बातिन का हमेशा बोलबाला हो सदा

रस्मी, तकलीदी, रिवायती, इल्म से मुझको बचा
माफ फरमा दे मेरे मौला मेरी हर इक ख़ता

शुक्रिया सद शुक्रिया, सूफी गयासुद्दीन पर,हर लुत्फों करम के लिये
हर रहम और हर करम, हर फैज़याबी के लिये

किबला अमीरूद्दीन की कर, सादगी मुझको अता
पाक दिल और साफ दिल से करूँ सबका भला

या इलाही कुबूल फरमा मुझको तसव्वुफ के लिये
इल्मे मुकाशफा, इल्मे बातिन, इल्मे लदुनी के लिये

लफ्ज़ कम हैं, हालते दिल को सुनाने के लिये
कर कुबूल मेरी हर दुआ, कादरी, चिश्ती,
शुत्तारी घराने के लिए



आमीन आमीन



मरकज़े तसव्वुफ

ख़ानक़ाह शरीफ कादरिया-शुत्तारिया-चिश्तिया

दरगाह सरकार ख्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख़्त्यार काकी (कु.सि.अ.)

1011-E-First, दरगाह शरीफ, महरौली, नई दिल्ली- 110030

7838116286, 9899943607

دُعائے با-اختیار کاکی قدس سرہٗ العزیز

قطبِ دیں، قطب الہند، با۔ اختیار کاکی کے واسطے
کھول دے میرے لئے ترقی کے سب راستے

مَرکزِ تصوف کو تصوف کا مرکز دے بنا
عِلمِ باطن کا ہمیشہ بول بالا ہو سدا

رسمی، تقلیدی، روایتی، علم سے مجھ کو بچا
معاف فرما دے میرے مولیٰ میری ہر اک خطا

شکریہ صد شکریہ، صوفی غیاث الدین پر ہر لطف و کرم کے لئے
ہر رحم اور ہر کرم، ہر فیض یابی کے لئے

قبلہ امیر الدین کی کر سادگی مجھ کو عطا
پاک دل اور پاک خیال سے کروں سب کا بھلا

یا الٰہی قبول فرما مجھ کو تصوف کے لئے
عِلمِ مکاشفہ، عِلمِ باطن، عِلمِ لدونی کے لئے

لفظ کم ہیں حالت دل کو سنانے کے لئے
کر قبول میری ہر دعا قادری، چشتی، شُطاری گھرانے کے لئے

آمــین آمــین





مَــرکَــزِ تَصَــوُّف
خَانقاہ شریف: قادریہ، شطاریہ، چشتیہ
درگاہ سرکار خواجہ قطب الدین با اختیار کاکی قدس سرہٗ العزیز ۱۰۱۱، ئی۔ یہلا، درگاہ شریف مہرولی، نئی دہلی-۱۱۰۰۳۰
7838116286, 9899943607

शजराये क़ुतबिया - चिश्तिया - आलिया

1. इल्तजा सुन ले ख़ुदा ख़ैरूल वरा के वास्ते → सरवरे आलम इमामुल अम्बिया के वास्ते
2. दिल से जो आती है लब पे वो दुआ करले कुबूल → शाफाए महशर मोहम्मद मुस्तफा के वास्ते
3. हामिले मन कुन्तो मौला, जा नशीने मुस्तफा → फातेह ख़ैबर अली मुश्किल कुशा के वास्ते
4. नय्यर बुरजे तरीकत मआदने बहरूल उलूम → ख़्वाजाए-ख़्वाजा हसन बसरी शहा के वास्ते
5. काबाए मकसूदे इमाँ, मख़जने सिर्रे निहां → अब्दे वाहिद पेशवाये असफिया के वास्ते
6. रहनुमाये दीनो-इमाँ, राज़दारे कुन फकाँ → शाह फज़ील इब्ने अयाज़ हक नुमा के वास्ते
7. रहबरे ग़व्वास, बहरे कुन्तो कनज़न, मख़फिया → ख़्वाजा इब्राहीम अधम बल्ख़ी, हक नुमा के वास्ते
8. आरिफे असरारे कुल्ली, महरमे राज़े ख़फी → बू-हुजैफा मरअशी इल्मुल हुदा के वास्ते
9. किबलाए इमान ओ दीन, आईनाए हक्कुल यकीं → बू-हुरैरा, ख़्वाजा बसरी बे रिया के वास्ते
10. साहिबे इरफाँ व हैदर उल असर, शाने औलिया → ख़्वाजाए मुमशाद दीनूरी, शहा के वास्ते
11. आफताबे सिर्रे इरफाँ, महरमे राज़े निहाँ → ख़्वाजा बू इसहाक शामी दिलरूबा के वास्ते
12. कुदरतुल हक, वालीये अकलीम, असरारे बका → शाह अबी अहमद लकाये, हकनुमा के वास्ते
13. मम्बये अनवारे इरफां, मज़हरे सिर्रे निहाँ → नासेहउद्दीन, बू मोहम्मद बे रिया के वास्ते
14. रफअते शाने अता, औजे कमाले इत्तका → नासिर उल हक ख्वाजा बू यूसुफ शहा के वास्ते
15. पासबाने इल्मो हिकमत रहनुमाये मआरफत → ख़्वाजा मौदूद चिश्ती बा सफा के वास्ते
16. मज़हरे जूदो करम, नूरे बका, शम्माए हरम → ख़्वाजा जिन्दनी शहा, सदक व सफा के वास्ते
17. ताजदारे मिल्के इरफाँ, ग़रके बहरे ला मकाँ → ख़्वाजा उसमान हारूनी, शहा के वास्ते
18. दिल रूबाये औलिया, ख़्वाजा मौईनुद्दीन हसन → हिन्द के वाली, शहा जूदो सख़ा के वास्ते
19. मसदरे इरफाँ, शहीदे इश्क, रूहे आश्की → ख़्वाजा कुतबुद्दीन, बा इख़्त्यार काकी मे-लका के वास्ते
20. पेशवाये अहले हक, गंजुल शकर बाबा फरीद → गोहरे ताजे विलायत, हक नुमा के वास्ते
21. ख़ुसर-वे ख़ूबां निज़ामुद्दीन महबूबे इलाह → रहनुमाये सरगिरोहे औलिया के वास्ते
22. गरके बहरे हक, नसीरूद्दीन चराग़े देहलवी → ना-खुदाये कश्तीये, अहले सफा के वास्ते

(23) मम्बाए सिर्रे बका, इमाने तसलीमो रज़ा → शाह कमालुल हक, कमाले इत्तेका के वास्ते

(24) हज़रत ख़्वाजा सिराजुल हक, अमीने सिर्रे हक → चश्माए असरारे हक, शैख़ुल असफिया के वास्ते

(25) साहबे इल्मे हुदा, रूहे र-वाने औलिया → शैख़ इल्मुल हक, चराग़े इन्नमा के वास्ते

(26) रूए नूरे यज़दी, अनवारे सोते सरमदी → ख़्वाजाए महमूद राजन हक नुमा के वास्ते

(27) कामिल ओ अकमल, जमाले हक, जमाले अहमदी → शैख़ जुम्मन राहबरे शाहो-गदा के वास्ते

(28) ख़्वाजा शैख़ मोहम्मद या कहें शैखे हसन → काशिफे असरारे कुत्बे औलिया के वास्ते

(29) वालीये मिल्के हकीकत, मज़हरूल्लाह अस्समद → हज़रत शैख मोहम्मद, बे रिया के वास्ते

(30) तलअते ईकाने हक, कुतबुल मदीना, शाने हक → आरिफे अल्लाह शैख याहया मदनी शहा के वास्ते

(31) हज़रते सूफी कलीमउल्लाह शैखुल औलिया → मज़हरे शाने फना, शाने बका के वास्ते

(32) चश्माये इरफाँ, निज़ामुद्दीन शैख़ुल आशेकीन → अज़मते औरंगाबादी रहनुमा के वास्ते

(33) मम्बए असरार, फख़रे अव्वलीन वा आख़रीन → ख़्वाजा फखरूद्दीन मोहम्मद हक नुमा के वास्ते

(34) फख़रे हक, फख़रे जहाँ, नूरे मोहम्मद नूरे हक → ताजदारे किश्वरे, अहले सफा के वास्ते

(35) इल्मे बातिन के अमीन, गुन्जीनाए असरारे दीं → हज़रत ख़्वाजा सुलेमान बे रिया के वास्ते

(36) वाकिफे राज़े इलाही, आलिमे इल्मे ख़फी → शाह मोहम्मद ख़ैराबादी ख़ुश लका के वास्ते

(37) दस्त गाहे तारीकुद-दुनिया लकब सरदार बेग → ख़्वाजाए-ख़्वाजा हुसैन अहमद शहा के वास्ते

(38) हज़रत मिर्ज़ा मोहम्मद बेग शाहे मआरफत → हादीये राहे तरीकत, हक नुमा के वास्ते

(39) हज़रत मिर्ज़ा महबूब बेग फरदुल फरीद फी तौहीद → माहताबे चिश्तिया, कलन्दरी बा सफा के वास्ते

(40) हज़रत ख़्वाजा क़िबला अमीरूद्दीन अनवारे यकीं → दीन के हकीकी अमीर बहरे लका के वास्ते

(41) ख़ादिमे तसव्वुफ सूफी गयासुद्दीन नूरे मआरफत → आरिफे कामिल, चरागे पुर ज़िया के वास्ते

(42) आजज़ी अहकर अमीरूद्दीन की मकबूल कर → दीन हक के इन नफूसे कुदसिया के वास्ते

23. منبعِ سرِّ بقا، ایمانِ تسلیم و رضا — شاہ کمال الحق، کمالِ اتّقا کے واسطے

24. حضرت خواجہ سراج الحق، امینِ سرِّ حق — چشمائے اسرارِ حق، شیخ اصفیاء کے واسطے

25. صاحبِ علمِ ھدیٰ روحِ روانِ اولیاء — شیخ علم الحق، چراغِ انماّء کے واسطے

26. روئے نورِ یزدی، انوارِ صوتِ سرمدی — خواجۂ محمود راجن حق نما کے واسطے

27. کامل و اکمل، جمالِ حق، جمالِ احمدی — شیخ جمّن راہبرِ شاہ و گدا کے واسطے

28. خواجۂ شیخ محمد یا کہیں شیخ حسن — کاشفِ اسرارِ قطبِ اولیاء کے واسطے

29. والیِ ملکِ حقیقت، مظہرِ اللہ الصّمد — حضرت شیخ محمد، بے ریا کے واسطے

30. طلعتِ ایقانِ حق، قطب المدینہ، شانِ حق — عارفِ اللہ شیخ یحییٰ مدنی شہا کے واسطے

31. حضرتِ صوفی کلیم اللہ شیخ الاولیاء — مظہرِ شانِ فنا، شانِ بقا کے واسطے

32. چشمۂ عرفاں، نظام الدین شیخ العاشقین — عظمتِ اورنگ آبادی رہنما کے واسطے

33. منبعِ اسرار، فخرِ اوّلین و آخرین — خواجہ فخرالدین محمد حق نما کے واسطے

34. فخرِ حق، فخرِ جہاں، نورِ محمد نورِ حق — تاج دارِ کشور، اہلِ صفا کے واسطے

35. علمِ باطن کے امین، گنجینۂ اسرارِ دیں — حضرت خواجہ سلیمان بے ریا کے واسطے

36. واقفِ رازِ الٰہی، عالمِ علمِ خفی — شاہ محمد خیرآبادی خوش لقا کے واسطے

37. دست گاہِ تارک الدنیا لقب سردار بیگ — خواجۂ خواجہ حسین احمد شہا کے واسطے

38. حضرتِ مرزا محمد بیگ شاہِ معرفت — ہادیِ راہِ طریقت، حق نما کے واسطے

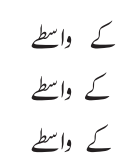
39. حضرت مرزا محبوب بیگ فردالفرید فی توحید — ماہتابِ چشتیا، کلندری با صفا کے واسطے

40. حضرت خواجہ قبلہ امیرالدین، انوارِ یقیں — دین کے حقیقی امیر بحرِ لقا کے واسطے

41. خادمِ تصوف صوفی غیاث الدین نورِ معرفت — عارفِ کامل، چراغِ پُرضیاء کے واسطے

42. عاجزی احقر امیرالدین کی مقبول کر — دین حق کے ان نفوسِ قدسیہ کے واسطے


مرکزِ تصوف
خادمِ تصوف
سرکار صوفی غیاث الدین شاہ
قادری، شطاری، چشتی، ہاشمی، حسینی، محبوبی
فون نمبر: 7838116286


سجادہ نشین
مرکزِ تصوف
صوفی سید امیرالدین شاہ
قادری، شطاری، چشتی، ہاشمی، حسینی، محبوبی
فون نمبر: 9899943607

۱۰۱۱، ئی-پہلا، درگاہ سرکار قطب الدین بااختیار کاکی قدس سرہ العزیز مہرولی شریف، نئی دہلی-۱۱۰۰۳۰

شجرۂ قطبیہ۔ چشتیہ۔ عالیہ

(1) التجا سن لے خدا خیر الوریٰ کے واسطے ← سرورِ عالم امام الانبیاء کے واسطے

(2) دل سے جو آتی ہے لب پہ وہ دُعا کرلے قبول ← شافعِ محشر محمد مصطفیٰ کے واسطے

(3) حاملِ مَن کنتُ مولیٰ، جانشینِ مصطفیٰ ← فاتحِ خیبر علی مشکل کشاء کے واسطے

(4) نیرّ برُجِ طریقت ، معدنِ بحر العلوم ← خواجۂ خواجہ حسن بصری شہا کے واسطے

(5) کعبۂ مقصودِ ایماں، مخزنِ سرِ نہاں ← عبدِ واحد پیشوائے اصفیاء کے واسطے

(6) رہنمائے دین و ایماں، رازدارِ کن فکاں ← شاہ فضیل ابنِ عیاض حق نما کے واسطے

(7) رہبرِ غوّاص، بحرِ کنتُ کنزاً مخفیا ← خواجہ ابراھیم ادھم بلخی، حق نما کے واسطے

(8) عاَرفِ اسرارِ کلیّ، محرمِ رازِ خفی ← بو حزیفہ مرعشی علم الھدیٰ کے واسطے

(9) قبلۂ ایمان و دین، آئینۂ حقُّ الیقیں ← بو ہریرہ، خواجہ بصری بے ریا کے واسطے

(10) صاحبِ عرفاں و ہیدر العصر، شانِ اولیاء ← خواجۂ ممشاد دینوری شہا کے واسطے

(11) آفتابِ سرِّ عرفاں، محرمِ رازِ نہاں ← خواجہ بو اسحاق شامی دلروبا کے واسطے

(12) قدرت الحق ، والیِ اقلیم، اسرارِ بقا ← شاہ ابی احمد لقائے، حق نما کے واسطے

(13) منبعِ انوارِ عرفاں، مظہرِ سرِّ نہاں ← ناصح الدین، بو محمد بے ریا کے واسطے

(14) رفعتِ شانِ عطا، اوجِ کمالِ اِتّقا ← ناصرِالحق خواجہ بو یوسف شہا کے واسطے

(15) پاسبانِ علم و حکمت، رہنمائے معرفت ← خواجہ مودود چشتی با صفا کے واسطے

(16) مظہرِ جودو کرم، نورِ بقا، شمعِ حرم ← خواجہ زندنی شہا، صدق و صفا کے واسطے

(17) تاجدارِ ملکِ عرفاں، غرقِ بحرِ لامکاں ← خواجۂ عثمان ہارونی، شہا کے واسطے

(18) دلرُبائے اولیاء، خواجہ معین الدین حسن ← ہند کے والی، شہا جودو سخا کے واسطے

(19) مصدرِ عرفاں، شہیدِ عشق، روحِ عاشقی ← خواجہ قطب الدین با۔اختیار کاکی مہ لقا کے واسطے

(20) پیشوائے اہلِ حق، گنج الشکر بابا فرید ← گوہرِ تاجِ ولایت، حق نما کے واسطے

(21) خُسروے خوباں نظام الدین محبوبِ الٰہ ← رہنمائے سَرگروہِ اولیاء کے واسطے

(22) غرقِ بحرِحق، نصیرالدین چراغِ دہلوی ← ناخدائے کشتئے، اہلِ صفا کے واسطے

दुआ-ए-मरकज़े तसव्वुफ

① जानता हूँ हद से बढ़ कर हैं मेरी बद फेलियाँ → तू मगर है रहम वाला और बड़ा ही मेहरबाँ

② तेरी रहमत की कोई हद है ना कोई इन्तेहा → बारिशे इकराम कर दे बख़्श दे मेरी ख़ता

③ कर मुझे इल्मे लदूनी की ज़िया से फैज़याब → दूर हो जाए नज़र से सिर्रे हस्ती का हिजाब

④ हाँ वही इल्मे तसव्वुफ जो बुज़ुर्गों को मिला → जिस से इनके गुलशने हस्ती का हर गुन्चा खिला

⑤ जिस ने अहले मआरफत को आशनाए हक किया → जिस की सूरत पर हुए गरवीदा सारे औलिया

⑥ बख़्श दे मौला उसी इल्मे सफा की रोशनी → दिल से मिट जाये मेरे गुमराहियों की तेरगी

⑦ नासमझ ना फहम हूँ नूरे बसीरत कर अता → सारे पीराने तरीकत की मोहब्बत कर अता

⑧ नूरे इश्के पन्जतन से दिल मेरा मामूर कर → बादऐ ईमाँ की लज़्ज़त से मुझे मस्तूर कर

⑨ कर बला की याद दिल में रोशनी बन कर रहे → उमर भर शब्बीर का ग़म ज़िंदगी बन कर रहे

⑩ दिल मेरा दुनिया की हर आलूदगी से पाक कर → मुझ को अहले मआरफत के रास्ते की ख़ाक कर

⑪ कर अता तौफीके कामिल हक परस्ती के लिये → मुन्तखब कर ले मुझे इरफाँ की मस्ती के लिये

⑫ दूर रख आमाले बद से, अहले शर के काम से → फितना परवर इल्मे रस्मी के सुनहरे दाम से

⑬ दुख, मुसीबत, कर्ज, बीमारी, बलाए नागहाँ → इन से रख महफूज़ हर दम ऐ ख़ुदाए मेहरबाँ

⑭ सबर ऐसा दे के मैं साबिर रहूँ हर हाल में → तेरे हर अहसान का शाकिर रहूँ हर हाल में

⑮ तुझ से उम्मीदे करम है वास्ता क्या तूर से → जगमगा दे दिल मेरा रूहानियत के नूर से

⑯ क्या बयाँ तुझ से करूँ मैं ए ख़ुदाए ज़लजलाल → सब अयाँ है तुझ पे मेरे ज़ाहिर व बातिन का हाल

⑰ अपनी शाने किबरियाई की झलक मौला दिखा → मुफलिसों को सदकऐ आले अबा कर दे अता

⑱ दस्त बस्ता मुल्तजी हैं ख़ाके पाए औलिया → हो करम इन पर ब फैज़े बारगाहे चिश्तिया

⑲ मेरे मौला लाज रख ले बन्दऐ रन्जूर की → हाथ फैलाए हुए इस नातवाँ मजबूर की

⑳ अपनी रहमत का दिले 'फारूख' पर कर दे नज़ूल → करबला वालों के सदके ये दुआ कर ले कुबूल



सज्जादा नशीन
मरकज़े तसव्वुफ
सूफी सय्यद अमीरुद्दीन शाह
कादरी, शुत्तारी, चिश्ती, हाशमी, हुसैनी, महबूबी
फोन : 9899943607

मरकज़े तसव्वुफ
ख़ादिमे तसव्वुफ
सरकार सूफी गयासुद्दीन शाह
कादरी, शुत्तारी, चिश्ती, हाशमी, हुसैनी, महबूबी
फोन : 7838116286



1011-E-First, Landmark दरगाह सरकार कुतबुद्दीन बा-इख़्त्यार काकी (कु.सि.अ.) महरौली शरीफ, नई दिल्ली-110030

دعائے مرکزِ تصوف

1. جانتا ہوں حد سے بڑھ کر ہیں مری بد فعلیاں ← تو مگر ہے رحم والا اور بڑا ہی مہرباں
2. تیری رحمت کی کوئی حد ہے نہ کوئی انتہا ← بارشِ اکرام کر دے بخش دے میری خطا
3. کر مجھے علمِ لدونی کی ضیا سے فیض یاب ← دور ہو جائے نظر سے سرِ ہستی کا حجاب
4. ہاں وہی علمِ تصوف جو بزرگوں کو ملا ← جس سے ان کے گلشنِ ہستی کا ہر غنچہ کھلا
5. جس نے اہلِ معرفت کو آشنائے حق کیا ← جس کی صورت پر ہوئے گرویدہ سارے اولیاء
6. بخش دے مولیٰ اُسی علمِ صفا کی روشنی ← دل سے مٹ جائے مرے گمراہیوں کی تیرگی
7. نا سمجھ نا فہم ہوں نورِ بصیرت کر عطا ← سارے پیرانِ طریقت کی محبت کر عطا
8. نورِ عشقِ پنجتن سے دل مرا مامور کر ← بادۂ ایماں کی لذّت سے مجھے مستور کر
9. کربلا کی یاد دل میں روشنی بن کر رہے ← عمر بھی شبّیر کا غم زندگی بن کر رہے
10. دل مرا دنیا کی ہر آلودگی سے پاک کر ← مجھ کو اہلِ معرفت کے راستے کی خاک کر
11. کر عطا توفیقِ کامل حق پرستی کے لئے ← منتجب کر لے مجھے عرفاں کے مستی کے لئے
12. دور رکھ اعمالِ بد سے، اہلِ شر کے کام سے ← فتنہ پرور علمِ رسمی کے سنہرے دام سے
13. دکھ، مصیبت، قرض، بیماری، بلائے ناگہاں ← ان سے رکھ محفوظ ہر دم اے خدائے مہرباں
14. صبر ایسا دے کہ میں صابر رہوں ہر حال میں ← تیرے ہر احسان کا شاکر رہوں ہر حال میں
15. تجھ سے امید کرم ہے واسطہ کیا طور سے ← جگمگا دے دل مرا روحانیت کے نور سے
16. کیا بیاں تجھ سے کروں میں اے خدائے ذوالجلال ← سب عیاں ہے تجھ پہ میرے ظاہر و باطن کا حال
17. اپنی شانِ کبریائی کی جھلک مولا دکھا ← مفلسوں کو صدقۂ آلِ عبا کر دے عطا
18. دست بستہ مُلتجی ہیں خاکِ پائے اولیاء ← ہو کرم ان پر بہ فیضِ بارگاہِ چشتیہ
19. میرے مولا لاج رکھ لے بندۂ رنجور کی ← ہاتھ پھیلائے ہوئے اس ناتواں مجبور کی
20. اپنی رحمت کا دلِ فاروقؔ پر کر دے نزول ← کربلا والوں کے صدقے یہ دُعا کر لے قبول



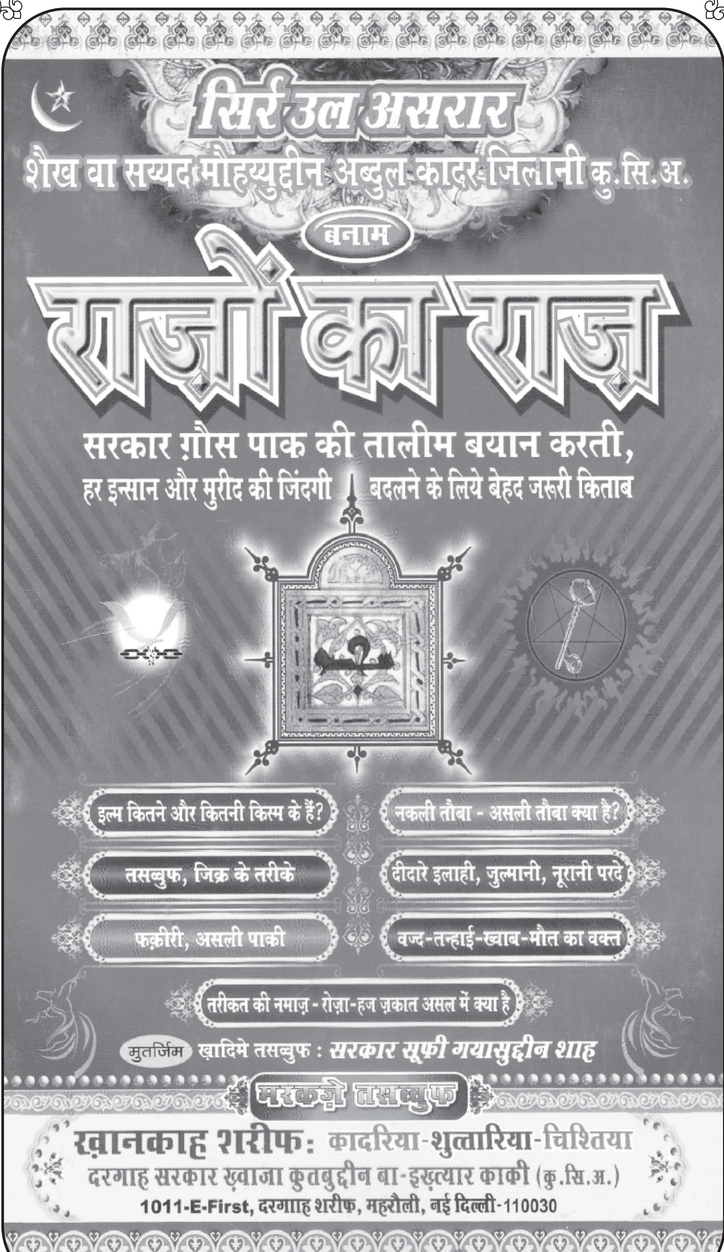
مرکزِ تصوّف
خادمِ تصوّف
سرکار صوفی غیاث الدّین شاہ
قادری، شطاری، چشتی، ہاشمی، حسینی، محبوبی
فون نمبر : 7838116286

MARKAZE TASAWWUF, MEHRAULI SHARIF, NEW DELHI-110030
مرکزِ تصوف

سجادہ نشین
مرکزِ تصوّف
صوفی سید امیرالدین شاہ
قادری، شطاری، چشتی، ہاشمی، حسینی، محبوبی
فون نمبر : 9899943607



۱۰۱۱، ئی - پھلا، درگاہ سرکار قطب الدین با-اختیار کاکی قدس سرہ العزیز مہرولی شریف ، نئی دھلی - ۱۱۰۰۳۰


सिर्र उल असरार
शैख वा सय्यद मौहय्युद्दीन अब्दुल कादर जिलानी कु.सि.अ.
बनाम
राज़ों का राज़
सरकार ग़ौस पाक की तालीम बयान करती,
हर इन्सान और मुरीद की जिंदगी बदलने के लिये बेहद जरूरी किताब
इल्म कितने और कितनी किस्म के हैं?
नकली तौबा - असली तौबा क्या है?
तसव्वुफ, जिक्र के तरीके
दीदारे इलाही, जुल्मानी, नूरानी परदे
फ़क़ीरी, असली पाकी
वज्द-तन्हाई-ख्वाब-मौत का वक्त
तरीकत की नमाज़ - रोज़ा-हज ज़कात असल में क्या है
मुतर्जिम ख़ादिमे तसव्वुफ : सरकार सूफी गयासुद्दीन शाह
मरकज़े तसव्वुफ
ख़ानकाह शरीफ: कादरिया-शुत्तारिया-चिश्तिया
दरगाह सरकार ख़्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख़्त्यार काकी (कु.सि.अ.)
1011-E-First, दरगाह शरीफ, महरौली, नई दिल्ली-110030

- ना-क़ाबिल में ना आलिम में न किताब में ज़ाहिर हुआ है
- जहालत ही सही पर अपनी जहालत में ज़ाहिर हुआ है।
- सब इल्मे अम्बार .ख़ूब है लेकिन हाल से ही असल ज़ाहिर हुआ है।
- अगर अल्फ़ाज़ों में तू बता ही रहा है तो बता ऐसे अल्लाह भी ज़ाहिर हुआ है।
- आला ना बन अगर जान रहा है इल्में बातिन को।
- ये याद रख वो सब में ही ज़ाहिर हुआ है।
- ये बात अलग है.... अरशद कुछ नहीं सही फिर भी ज़ाहिर है कि अल्लाह ज़ाहिर हुआ है।

- छुपा हुआ ख़ज़ाना वो ज़ाहिर हुआ है। कुन्तु कनज़न मखिफ़यान में इंसान ज़ाहिर हुआ है।

- जो क़लम बनाया अव्वल में वो कहाँ ज़ाहिर हुआ है। हक़ीक़त-ए-इंसान में वो कौन ज़ाहिर हुआ है।

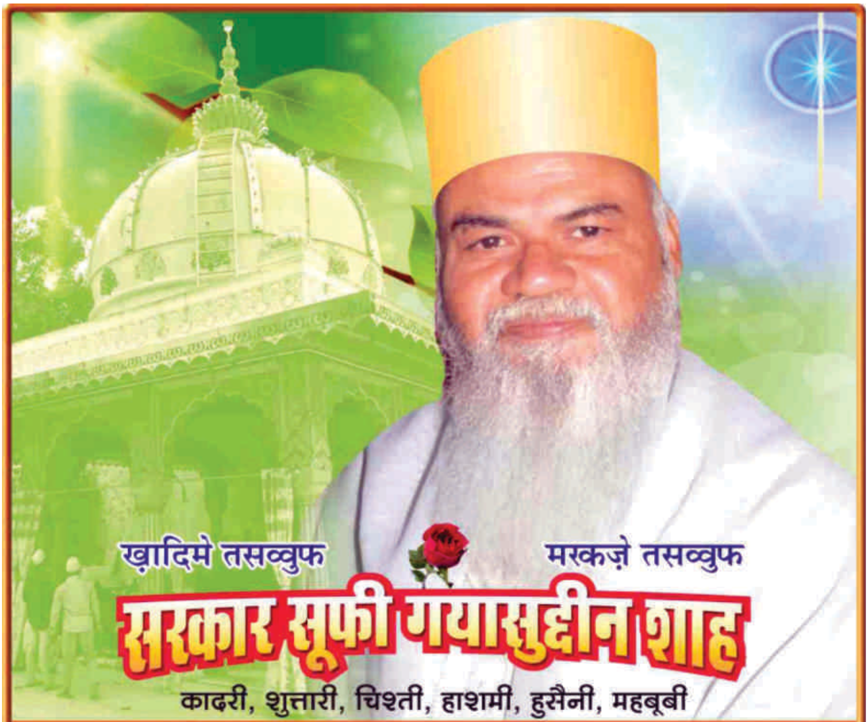
- जो था एक वहदत में वो कसरत में ज़ाहिर हुआ है। कल्मा हो गये जो उन्हीं में कल्मा ज़ाहिर हुआ है।

- पूछते हैं 'ला' में क्या ज़ाहिर हुआ है।

- जो माना वो नहीं, जो समझा तो 'ला' में इन्सान ज़ाहिर हुआ है।

- अज़्ल से आए हैं वारिसे हक़ बनकर, किसकी हिम्मत है जो छीने विरासत हमारी।

शुक्रिया


ख़ादिमे तसव्वुफ
मरकज़े तसव्वुफ
सरकार सूफी गयासुद्दीन शाह
कादरी, शुत्तारी, चिश्ती, हाशमी, हुसैनी, महबूबी


सज्जादा नशीन
मरकज़े तसव्वुफ
सूफी अमीरुद्दीन शाह
कादरी, शुत्तारी, चिश्ती, हाशमी, हुसैनी, महबूबी

SARKAR SUFI
GHYASSUDDIN SHAH



سرکار صوفی
غیاث الدین شاہ





MARKAZE TASAWWUF

Khanqah Sharif Qadriya, Shuttariya, Chishtiya

DARGAH KHWAJA QUTUBUDDIN BA-IKHTIYAR KAKI (Q.S.A.)

1011-E-First, Ward No. 7, Mehrauli, New Delhi-110030